



दैनिक पुष्पांजली टुडे



नई सोच नई पहल

वर्ष 04 : अंक : 31

ज्वालियर, रविवार 21 मार्च 2021

pushpanjalitoday@gmail.com

मूल्य : 01, रुपए, पृष्ठ 8

न्यूज ट्रैक

सचिन तेंदुलकर ने लिए उन 2 खिलाड़ियों के नाम, जो इस साल टी-20 वर्ल्ड कप खेलने के लिए हैं तैयार



नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ जारी वनडे सीरीज के जिए भारत इस साल होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप की टीम तैयार कर रहा है। दोनों देशों के बीच इस समय सीरीज 2-2 से बराबरी पर चल रही है। टूर्नामेंट में अब तक भारत के लिए कुछ पाँजिटिव चीजें भी निकलकर सामने आई हैं, जिनमें पहली बार देश के लिए खेल रहे ईशान किशन और सूर्यकुमार यादव का शानदार प्रदर्शन शामिल है। ईशान ने जहां अपने डेब्यू मैच को यादगार बनाते हुए फिफ्टी जड़ी, वहीं सूर्यकुमार ने करियर के दूसरे मैच में मैच जिताऊ पारी खेली। दोनों के प्रदर्शन पर मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर ने बड़ा बयान दिया है।

पांचवें टी20 मैच में कुछ ऐसी हो सकती है भारत और इंग्लैंड की प्लेइंग-सचिन तेंदुलकर ने कहा है कि, ईशान किशन और सूर्यकुमार का इंग्लैंड के खिलाफ प्रदर्शन शानदार रहा है और दोनों खिलाड़ी इस साल भारत में होने वाले टी-20 विश्व कप में खेलने के लिए तैयार हैं। बता दें कि सचिन रिकॉर्ड पांच बार आईपीएल खिताब जीत चुकी मुंबई इंडियंस के मेंटोर रहे चुके हैं, जहां उन्होंने इन दोनों खिलाड़ियों के खेल को काफी नजदीकी से देखा है। इसके अलावा सचिन ने दोनों खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन करने का क्रेडिट आईपीएल को दिया।

वॉन ने बताया, राहुल की जगह इस बल्लेबाज को करनी चाहिए ओपनिंग-भारत के महान बल्लेबाज ने कहा कि आईपीएल ने खिलाड़ियों को टॉप स्टार खिलाड़ियों से कंधे से कंधा मिलाने और सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के खिलाफ कॉम्पिटिवन करने का मौका प्रदान किया है। उन्होंने कहा, कल जब मैं मैच देख रहा था तो सूर्य बल्लेबाजी कर रहा था और जोफ्रा आचर और बेन स्टोक्स उसे गेंदबाजी कर रहे थे। उस समय कमेंटरीटर ने कहा कि सूर्य के लिए यह नया नहीं है, क्योंकि वह राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ खेल चुका है। दोनों आचर और स्टोक्स राजस्थान रॉयल्स के लिए खेलते हैं इसलिए यह कुछ भी नया नहीं था और वह (सूर्य) जानता है कि वे क्या करना है।

लड़की से दारोगा की गंदी बात को नज़रअंदाज करना पड़ा भारी बस्ती के एसपी हेमराज मीणा हटाए गए, कोतवाल सस्पेंड



बस्ती। चेंकिंग के बहाने लड़की को रोककर उसका मोबाइल नंबर लेने और फिर बार-बार फोन कर गंदी बात करने वाले दारोगा की गलती को हलके में लेना बस्ती के आला पुलिस अधिकारियों को भारी पड़ गया। शनिवार को इस मामले में अर्धरात्रि करके हुए शासन ने हेमराज मीणा का तबादला कर दिया। इसके साथ ही आरोपित दारोगा दीपक कुमार सिंह और कोतवाल रामपाल यादव को सस्पेंड कर दिया गया है। एसपी हेमराज मीणा की जगह पर आशीष श्रीवास्तव को बस्ती का नया एसपी बनाया गया है। यह कार्यवाही शनिवार को एडीजी अखिल कुमार, कमिश्नर अनिल कुमार सागर और बस्ती की डीएम के पीड़ित लड़की के घर पहुंचने के बाद की गई। इस मामले में महिला आयोग ने बेहद सख्त रुख अपनाते हुए जांच और कार्यवाही करने को कहा था। अधिकारियों की टीम ने दारोगा दीपक कुमार सिंह पर लगाए गए आरोपों और लड़की के परिवार पर दुर मुकदमों की जांच की। लड़की और उनके परिवार के सदस्यों के अलावा गांव के कई अन्य लोगों के बयान भी लिए गए। यह है मामला-उत्तर प्रदेश के बस्ती में एक दारोगा ने अपने पद और पॉवर के दुरुपयोग की हद पार कर दी थी। दारोगा ने लोकडाउन में चेंकिंग के बहाने एक लड़की को रोककर, मास्क न पहनने पर टोका और फिर मोबाइल नंबर ले लिया। इसके बाद वह लड़की को अक्सर फोन करने लगा। जैसे ही भेजने शुरू कर दिए। जब वे जैसे ही बातचीत बर्दाश्त के बाहर हो गई तो लड़की ने एतराज कर दिया। इसके बाद दारोगा ने लड़की के भाईयों और अन्य सगे-सम्बन्धियों के खिलाफ मुकदमों का ऐसा जाल बिछाया कि परिवार बुरी तरह परेशान हो उठा।

राशन की डोर स्टेप डिलीवरी पर केंद्र की आपत्ति के बाद केजरीवाल योजना का नाम बदलने को तैयार

नई दिल्ली। दिल्ली में राशन की डोर स्टेप डिलीवरी के लिए लाई गई मुख्यमंत्री घर-घर राशन योजना केंद्र सरकार के एतराज के बावजूद आखिर किस तरह शुरू की जा सकती है, इसे लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को बुलाई गई एक समीक्षा बैठक में बेहद अहम निर्णय लिया है। केजरीवाल ने इस योजना के से नाम हटाने की बात कही है। बैठक के बाद केजरीवाल ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि इस महीने की 25 मार्च से मुख्यमंत्री घर-घर राशन योजना के नाम से दिल्ली में एक बहुत ही क्रांतिकारी योजना चालू होने जा रही थी। जैसा कि हम सब लोग जानते हैं कि सरकार गरीबों को सस्ता राशन देती है। अभी तक लोगों को दुकानों पर राशन मिलता था। राशन लेने के लिए लोगों की लंबी-लंबी लाइनें लगती हैं। राशन की दुकानों कभी-कभी खुलती हैं। राशन की दुकानों में आने वाले अनाज में मिलावट होती है। दुकानदार कई बार ज्यादा पैसे लेते हैं और उन्हें तरह-तरह की परेशानी होती है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली सरकार ने काफी लोगों से चर्चा करने के

बाद कुछ वक पहले समाधान निकाला कि जितना गेहूं बनता है उतना ही आटा, जितना चावल बनता है वो उसे बोरी में पैक करके घर पहुंचा दें तो राशन बंटवारे को लेकर जो समस्या है वह हल हो जाएगी। यह सोचकर दिल्ली में मुख्यमंत्री घर-घर राशन योजना शुरू करने का फैसला किया गया। इसे 25 मार्च से शुरू किया जाना था, मगर शुक्रवार को दोपहर में केंद्र सरकार से हमारे पास एक चिट्ठी आई है कि आप ये राशन योजना लागू नहीं कर सकते हैं। क्यों नहीं लागू कर सकते यह जानकर हमें थका लगा? उस चिट्ठी में कारण बताया गया है कि इस योजना का नाम मुख्यमंत्री घर-घर राशन योजना नहीं रखा जा सकता है। उन्हें शायद मुख्यमंत्री शब्द से समस्या है। हम बताना चाहते हैं कि हम अपना नाम करने के लिए ऐसा नहीं कर रहे हैं। हम अपना नाम चमकाने के लिए नहीं कर रहे हैं। हम कोई क्रेडिट लेने

के लिए ऐसा नहीं कर रहे हैं। चिट्ठी में लिखा है कि मुख्यमंत्री लिखे होने से यह योजना राज्य सरकार की होगी। मैं साफ-साफ बताना चाहता हूँ कि आम आदमी पार्टी (आप) की सरकार किसी क्रेडिट के लिए काम नहीं कर रही है, सारा क्रेडिट उनका, काम सारा मेरा, जिम्मेदारी सारी मेरी। आज सुबह मैंने अधिकारियों के साथ बैठक की और इस योजना से नाम हटाने के लिए कह दिया है। अब उसका कोई नाम नहीं होगा। वस पहले जो राशन आता था वह दुकानों के जरिये बंटता था, अब उसे सीधे घर-घर पहुंचाएंगे। हमें किसी नाम या क्रेडिट लेने के अंदर नहीं पड़ना। मैं समझता हूँ कि इस निर्णय के बाद केंद्र सरकार की जो आपत्तियां थीं वो दूर हो जाएंगी और केंद्र सरकार इसे लागू करने के लिए मंजूरी देगी। केजरीवाल ने कहा कि राशन माफिया को दूर करके लोगों तक राशन पहुंचाना मेरे लिए बहुत अहमियत

रखता है। आज से 22 साल पले राशन माफिया के साथ मेरा संघर्ष शुरू हुआ था। मैं आयकर विभाग में काम करता था। उस दौरान ही मैंने झुगियों के अंदर काम किया। उसी दौरान पता चला कि राशन लेने में दिक्कत आती है। उस दौरान आरटीआई के जरिये पता किया था कि कैसे फर्जी साइन करके लोगों के राशन को चुराया जा रहा था। उस दौरान हमने इसके खिलाफ आवाज उठाई। उस दौरान कई कार्यकर्ताओं के खिलाफ हमले हुए। मगर उसका नतीजा कुछ खास नहीं निकला। हम लेने व्यवस्था नहीं बदल पाए। किस्मत से दिल्ली में हमारी सरकार बन गई। इस पर निर्णय लेने का अधिकार हमारे पास आ गया। पिछले कुछ सालों में इस मामले से मैं सीधे तौर पर जुड़ा हूँ कि कैसे लोगों को सीधे घर-घर राशन पहुंचा सके। यह बेहद अच्छी योजना है। इस योजना से राशन धीरे-धीरे पहुंचेगा। तीन-चार साल से मैं इस राशन माफिया के खिलाफ लड़ रहा हूँ। अब जब हमारा सपना पूरा हो रहा था तो कल यह अडचन आई तो हमारा दिल टूट गया। हम केंद्र सरकार को सभी शर्तें मांगेंगे।



असम में गरजे पीएम मोदी चाय की पहचान खत्म करने की कोशिश करने वालों के साथ कांग्रेस खड़ी

दिसपुर। असम विधानसभा चुनाव के लिए चंबुआ में आयोजित रैली में पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस असम के लोगों से बहुत दूर चली गई है। हाल ही में उन्होंने श्रीलंका की एक फोटो शेयर की और बताया कि यह असम है। इसके बाद ताड़वान की भी फोटो शेयर कर उसे असम बताया। यह हमारे खूबसूरत असम के साथ अन्याय और अपमान है। प्रधानमंत्री ने नरेंद्र मोदी ने चुनावी रैली में टूलकिट मुद्दे को उठाया और दावा किया कि कांग्रेस उन लोगों के साथ खड़ी है जो असम के चाय की पहचान को समाप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं असम में या पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में जाता हूँ, बहुत गौरव से वहां की संस्कृति से जुड़कर मुझे आनंद आता है। अब जैसे मुझे यह गमछ पहनाया गया, मेरे लिए बड़े गर्व और सम्मान का विषय होता है। लेकिन कांग्रेस इसका भी मजाक उड़ाती है। आज जब हम आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में जुटे हैं, तो इस पूरे क्षेत्र को इतने बहुत बड़ी भूमिका है। चाय के एक्सपोर्ट में ही नहीं बल्कि ये क्षेत्र और भी कई ऑर्गेनिक फूड का एक्सपोर्टर हो सकता है। रैली में प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा, टी गार्डन्स में काम करने वाले हमारे साथियों की दैनिक मजदूरी बढ़ने



के लिए भी एनडीए सरकार प्रतिक्रिया है। मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि असम सरकार ने बीते 2-3 वर्षों में इसमें बड़ोतरी की है। लेकिन हमारे ये प्रयास अदालत में अटक गए। इसका लाभ उत्तरक विपक्षी दल तरह तरह के भ्रम और झूठ फैला रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि यहाँ 5 साल पहले ब्रह्मपुत्र पर पुलों की स्थिति क्या थी, ये आप भली-भांति जानते हैं। नए ब्रिज तो छोड़िये जो सालों पहले अटल जी की सरकार ने शुरू किए थे, उन्हें भी कांग्रेस सरकारों ने लटकवा दिया था। हमने इन प्रोजेक्ट्स को तेजी से पूरा किया। आज ब्रह्मपुत्र पर बोगिविल समेत 4 बड़े ब्रिज शुरू हो चुके हैं। अनेक नए सेतुओं पर काम चल रहा है। कांग्रेस पर हमला बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि आपको याद रखना है कि यह वही कांग्रेस है, जिसने मूल निवासियों को जमीन का अधिकार देने के लिए कभी भी गंभीर कदम नहीं उठाए। यहाँ के मूल निवासियों को जमीन के पट्टे देने का काम सर्वानंद जी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार ने ही शुरू किया। कभी भी सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस, आज सिमटती जा रही है। कारण बिस्कुल साफ है। कांग्रेस में प्रतिभा के प्रति सम्मान नहीं है, सत्ता का लालच सर्वोपरि है। सत्ता के लिए ये किसी का भी साथ ले सकते हैं, किसी का भी साथ दे सकते हैं।

जापान की राजधानी में भूकंप के जोरदार झटके, 7.2 की तीव्रता से हिली टोक्यो की धरती

एपी.टोक्यो। जापान की राजधानी टोक्यो में जोरदार भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। इसकी तीव्रता यूएसजीएस के अनुसार 7.2 मापी गई है। टोक्यो में शांन छह बजकर 10 मिनट से ठीक पहले भूकंप आया। यूएसजीएस ने बताया कि भूकंप का केंद्र जापान के इशिगोमाकी के 34 किलोमीटर पूर्व में और 60 किलोमीटर गहराई में था। जापान की गौरेम डिजान एजेंसी ने भूकंप के तुरंत बाद मियागी प्रांत के शिपे सुनामी की चेतावना जारी की है। हालांकि 90 मिनट के बाद चेतावनी वापस ले ली गई। जापान के हावा टीवी ने कहा है कि सुनामी पहले से ही मियागी तट के कुछ हिस्सों में पहुंच गई होगी।

दुनिया की सबसे बड़ी वसूली करने वाली पार्टी है बीजेपी, कम से कम 30 बार हो ईवीएम की जांच: ममता बनर्जी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को भाजपा की आलोचना करते हुए उसे दुनिया में सबसे बड़ी तोलाबाज (वसूली करने वाली) पार्टी बताया और कहा कि उसे राज्य में कभी भी सत्ता में नहीं आने देना चाहिए। पूर्वी मेदिनीपुर जिले के हलदिया में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए बनर्जी ने भाजपा पर दंगों की साजिश रचने, लोगों की हत्या करने और दलित लड़कियों को प्रताड़ित करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा, भाजपा दुनिया में सबसे बड़ी तोलाबाज (वसूली करने वाली) पार्टी है, देखिए पीएम केयार फंड के तहत उसने कितना पैसा इकट्ठा किया। अगर पश्चिम बंगाल के लोग शांति और दंगों से मुक्त राज्य चाहते हैं,

तो तुणमूल कांग्रेस ही एकमात्र विकल्प है। टीएमसी सुप्रिमो ने आरोप लगाते हुए कहा, लोगों की हत्या के लिए जिस पार्टी ने दंगे करवाए उसे कभी बंगाल में शासन मत करने देना। भाजपा में तो महिलाएं भी सुरक्षित नहीं हैं। बनर्जी ने कहा कि भाजपा लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव नहीं लड़ सकती। आपको बता दें कि पश्चिम बंगाल में आठ चरणों में 27 मार्च से चुनाव होंगे। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सबकुछ बेच देने का आरोप लगाया। इस महीने की शुरुआत में चुनाव प्रचार के दौरान चॉटल हूई बनर्जी अभी व्हीलचेयर पर ही चुनाव प्रचार कर रही हैं।



पाक पीएमइमरान खान मिले कोरोना पॉजिटिव दो दिन पहले लगवाई थी चीनी वैक्सीन

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने ट्वीट किया था कि प्रधानमंत्री इमरान खान को चीन की वैक्सीन की पहली डोज लगवाई थी। कोरोना पॉजिटिव मिलने के बाद इमरान खान होम आइसोलेशन में चले गए हैं। हाल ही में पाकिस्तान को चीन से करीब पांच लाख वैक्सीन की डोज दान में मिली है। इसके बाद प्रधानमंत्री इमरान खान ने वैक्सीन लगवाई। हालांकि, इमरान खान को अभी पहली डोज ही लगी है। संक्रमण से बचने के लिए दो डोज लगानी जरूरी है। वैक्सीन लगवाने के बाद इमरान खान ने अपने देश के लोगों से महामारी के मामलों में वृद्धि को रोकने के लिए नियमों का

पालन करने का आग्रह किया था। खान के कार्यालय में टीका लगाया गया। इस अवसर पर उन्होंने देश के लोगों से महामारी की तीसरी लहर के मद्देनजर एसओपी को पूरी तरह से मानने का आग्रह किया। पाकिस्तान में कोरोना वायरस के मामले काफी तेजी से बढ़ रहे हैं। पाकिस्तान में शनिवार को इस साल एक दिन में कोरोना वायरस संक्रमण के सबसे अधिक 3,876 नए मामले सामने आए, जिसके साथ ही देश में संक्रमण दर बढ़कर 9.4 प्रतिशत हो गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि देश में अब तक 623,135 लोग वायरस से संक्रमित पाए जा चुके हैं। बीते 24 घंटे के दौरान 40 रोगियों की मौत के बाद मृतकों की संख्या 13,799 हो गई है। मंत्रालय ने यह भी बताया कि पाकिस्तान में अब तक कुल 579,760 लोग संक्रमण से उबर चुके हैं। 2,122 रोगियों की हालत गंभीर है। गौरतलब है कि पाकिस्तान ने अभी तक कोई वैक्सीन नहीं बनाई है। इसके अलावा, वह इस साल वैक्सीन खरीदने पर भी विचार नहीं कर रहा है। दरअसल, पाकिस्तान चीन की वैक्सीन और खरात में अन्य देशों से मिलने वाली वैक्सीन के भरोसे ही बैठा हुआ है। इन्हीं वैक्सीन के बंदौलत पाकिस्तान ने 60 साल से अधिक उम्र वाले लोगों का वैक्सीनेशन भी हल में शुरू किया है। पाकिस्तान का लक्ष्य इस साल के अंत तक 7 करोड़ लोगों को टीका देने का है।



मप्र में पहली बार जेल में लगाया गया टीकाकरण शिविर, कैदियों को लगाई जा रही वैक्सीन

भोपाल। मप्र में पहली बार, इंदौर के सेंट्रल जेल में कैदियों को कोविड-19 का टीका लगाया जा रहा है। यहाँ कई कैदियों में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई थी। सेंट्रल जेल के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट लक्ष्मण सिंह भदौरिया ने न्यूज एजेंसी एएनआई को बताया, पिछले एक साल में, कई कैदियों और जेल कर्मचारियों को कोरोना पाए गए थे। इनके लिए अस्थायी जेल और क्वारंटीन केंद्र भी बनाए गए थे। हालांकि इस दौरान किसी की भी मौत नहीं हुई। वर्तमान में पांच कैदी और दो स्टाफ कोरोना पॉजिटिव हैं, जिनका इलाज चल रहा है। जेल अधिकारियों के अनुसार, यह मध्य प्रदेश की पहली जेल है जहाँ अभी तक राकेश भांगड़ा ने जिला प्रशासन के साथ मिलकर एक टीकाकरण शिविर लगवाया है। उन्होंने कहा, आज टीकाकरण शिविर का कुल 300 टीके प्रातः हुए। कैदियों और कुछ कर्मचारियों का टीकाकरण किया गया। इनमें वे भी शामिल हैं जो 45 वर्ष से अधिक उम्र के हैं और उन्हें कोई बीमारी है। साथ ही जिनकी उम्र 60 वर्ष से अधिक है। उन्होंने

आगे कहा कि उप-अधीक्षक भदौरिया सहित जेल के कर्मचारियों में से 90 प्रतिशत लोग टीकाकरण करवा चुके हैं। जेल में वैक्सीन का संचालन करने वाले डॉ. विवेक सिंह चौहान ने कहा, कोविड-19 वैक्सीन की 300 खुराक प्रातः हुई हैं। सभी कैदियों का टीकाकरण किया जाना है। आज 150 लोगों को टीका लगाया जाएगा। शेष टीकाकरण आगे भी जारी रहेगा। मध्य प्रदेश में जेल में टीकाकरण किया जा रहा है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, मध्य प्रदेश उन आठ राज्यों में शामिल है, जहाँ रोजाना सामने आ रहे नए मामले लगातार बढ़ रहे हैं। राज्य में पिछले 24 घंटों में 1,140 नए मामले सामने आए हैं।



आज 800 से ज्यादा नए मरीज मिले, एक्टिव केस 3400 के पार

नई दिल्ली। कोरोना महामारी (कोविड-19) दिल्ली में फिर से विकराल रूप धारण करती नजर आ रही है। दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे संक्रमितों के आंकड़े रोज नए रिकॉर्ड बना रहे हैं। इसे देखते हुए लोगों को फिर से लॉकडाउन का डर सताने लगा है। बीते कुछ दिनों से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब जैसे देश के कई अलग-अलग राज्यों में तेजी से बढ़ते मामलों के बाद वहाँ नाइट कर्फ्यू और सख्ती बढ़ाए जाने से दिल्ली में भी इसकी आशंका जताई जाने लगी है। दिल्ली में करीब तीन महीने बाद शनिवार को एक बार फिर कोरोना के 800 से अधिक नए मरीज मिलने के बाद यहाँ संक्रमितों का कुल आंकड़ा बढ़कर 6.47 लाख

के पार पहुंच गया है। इसके साथ ही 1700 से अधिक मरीज होम आइसोलेशन में-दिल्ली सरकार के फीसदी पर आ गया है। कोरोना की जारी हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, बीते 24 घंटों में जहाँ कोरोना के 813 नए मरीज मिले हैं और दो मरीजों को

अपनी जान भी गंवानी पड़ी है। हालांकि, दिल्ली में आज 567 मरीज कोरोना मुक्त होकर अपने घरों की लौट गए हैं। स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि दिल्ली में अब तक संक्रमितों की कुल संख्या 6,47,161 हो गई है। वहीं आज 1722 मरीज होम आइसोलेशन में हैं। राजधानी में अब कोरोना वायरस संक्रमण के एक्टिव केस भी एक बार फिर से बढ़कर 3,409 हो गए हैं। वहीं, अब तक कुल 6,31,375 मरीज इस महामारी को मात देकर कोरोना मुक्त हो चुके हैं। इसके साथ ही अब तक मरने वालों की संख्या 10,948 हो गई है। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, आज दिल्ली में कुल 75,888 टेस्ट किए गए हैं।



ज्वालियर से प्रकाशित दैनिक पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, ऑनलाइन न्यूज चैनल, पोर्टल, एंड्रॉयड ऐप

को

सम्पूर्ण भारत में नियुक्त करना है

ब्यूरो चीफ/रिपोर्टर
मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोआ, कर्नाटक, केरल

आदि राज्यों के जिला एवं तहसील स्तर पर मनोनीत करना है

समर्क करे

जी.एस. प्लाजा सूर्य मंदिर रोड गोले का मंदिर, ज्वालियर मध्यप्रदेश

फोन: 0751-4901403

मो. 7879637585, 8770253710

Website-www.pushpanjalitoday.com

Email- pushpanjalitoday@gmail.com

एक नजर...



कोरोना वैक्सीन लगवाने के लिए भाजपा कार्यकर्ता चला रहे हैं जन जागरण अभियान

पुष्पांजली टुडे रिपोर्टर संतोष सिंह भदौरिया
गोरमी। कोरोना वैक्सीन जोकि गोरमी नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर 60 साल से ऊपर के वृद्ध एवं 45 साल से ऊपर के बोलोग जिनको कोई लाइलाज बीमारी है ऐसे लोगों को कोरोना वैक्सीन लगाई जा रही है इसके लिए प्रशासन स्तर पर नगर पंचायत द्वारा वाई वाई में प्रचार प्रसार अभियान चलाया जा रहा है भाजपा मंडल गोरमी द्वारा भी गोरमी नगर के अलग-अलग भागों में जाकर भाजपा कार्यकर्ता लोगों को कोरोना वैक्सीन लगवाने की अपील कर रहे हैं। जिससे इस खतरनाक बीमारी से बचाव हो सके भाजपा मंडल अध्यक्ष सुभाष थापक एवं कोरोना वैक्सीन जन जागरण अभियान के गोरमी मंडल के कोविड-19 वैक्सीन प्रभारी संतोष सिंह भदौरिया एवं रज्जन भदौरिया ने गोरमी मंडल के समस्त कार्यकर्ताओं एवं आमजन से ज्यादा से ज्यादा लोगों को कोरोना वैक्सीन लगवाने की अपील की है।

एक शाम हरी के नाम



ब्यूरो चीफ पुष्पांजली टुडे नारायणलाल सैणचा बैंगलोर

हासन। होलेनरसिपुरा समस्त राजस्थान समाज के बंधुओं ने मिलकर एक शाम हरी के नाम भजन संध्या का आयोजन किया भजन गायक जुगल किशोर परिहार एंड पार्टी एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया इस दौरान समाज के बंधुओं ने भजन गायक जुगल किशोर जी को पुष्पांजली टुडे नारायणलाल सैणचा का आभार प्रदर्शन किया प्रकाश जी जाट ने कहा की एक शाम हरी नाम और गौ भक्तो ने प्रसादी ग्रहण करके भजनों का आनंद लिया दिल खोलकर गौ माता के लिए सहयोग राशी का योगदान दिया। आयोजन कर्ता समस्त राजस्थान समाज गणमान्य सिद्धार्थ जी बोहरा मदन जैन गौतम जैन कमल जी जैन मनीष जी गांधी संदीप जी जैन विक्रम जैन महावीर जैन भाकर पटेल लाबुराम सिरवी मालाराम सिरवी किशोर सिरवी उर्जामि सिरवी गोपाल सिरवी बाबूलाल मुकेश देवासी मांगीलाल देवासी सोहनलाल जी पटेल उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य विभाग ने चलाया कोविड 19 टीकाकरण अभियान



पुष्पांजली टुडे गौरव शर्मा

मुर्ना। पहाड़गढ़ द्वारा आज कोरोना वैक्सीन के शिबिर का आयोजन किया गया जिसमें कन्हार चौधा जडेरू पंचायत के आदिवासी क्षेत्रों से 290 लोगों ने सफलतापूर्वक टीकाकरण कराया जिसमें सभी विभागों के मैदानी अमले लोकल जनप्रतिनिधि और समाजसेवियों ने भरपूर सहयोग किया कोविड 19 जैसी महामारी से निपटने के लोगों को जागरूक किया और स्वदेशी कोविड 19 का टीकाकरण अभियान चलाकर वरिष्ठजनों को कोविड का टीका लगाया गया। नागरिकों से अपील की अधिक से अधिक संख्या में कोविड का टीका लगवाकर इस महामारी को जड़ से खत्म करें साथ ही वरिष्ठजनों को बताया कि टीकाकरण के साथ इस वायरस से बचने के लिए शारीरिक दूरी का पालन करना है, मास्क आवश्यक रूप से पहनना है व समय समय पर हाथों को साफ करना है। और आम जनो को बताया की माननीय प्रधानमंत्री ने एक नारा दिया है कि दवाई भी और कड़ई भी इस का पालन सभी नागरिकों को करना है।

कलेक्टर एवं एसपी ने गोहद बेसली डेम का किया मुआयना

दैनिक पुष्पांजली टुडे
गोहद। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस एवं पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह, कमाण्डेंट एसएफ अमित सुरेश सोलानी ने गोहद के बेसली डेम का मुआयना किया।



उन्होंने समाजसेवियों द्वारा किये जा रहे डेम गहरीकरण को देखा। कलेक्टर को समाज सेवियों द्वारा बताया गया कि गोहद शहर में पानी की विकराल समस्या है। गोहद डेम पूरी तरह से सूख गया है। पानी के कारण लोग रात-दिन परेशान हो रहे। जिस पर कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने पानी की समस्या को हल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि गोहद डेम भरने के लिए पिल्टुआ बांध से पानी छोड़ दिया गया है जो बसईयां माता मंदिर के रास्ते डेम में आना शुरू हो गया है और जल्द ही बेसली डेम भर जाएगा। इस अवसर पर एसडीएम गोहद श्री सुभम शर्मा के अलावा जल संसाधन के कार्यपालन यंत्रि व अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

कलेक्टर ने कोरोना संक्रमण के फैलते प्रभाव एवं बढ़ती पर रोक लगाने हेतु धारा 144 में निहित शक्तियों का प्रयोग कर निम्नानुसार आदेश प्रसारित किए हैं

पुष्पांजली टुडे उमाकान्त शर्मा
 वायरस (कोविड-19) के संक्रमण पर प्रभावी नियंत्रण एवं जन सामान्य के स्वास्थ्य हित एवं लोक शांति बनाने रखने के उद्देश्य से म प्र शासन गृह विभाग मंत्रालय भोपाल द्वारा दिये गये दिशा निर्देश के अनुक्रम में तथा संकट प्रबंधन समूह के प्रतिनिधियों की ओर से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुये, कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी जिला भिण्ड सतीश कुमार एस ने भिण्ड जिले की राजस्व सीमान्तगत दण्ड प्रकिया संहिता की धारा 144 में निहित शक्तियों का प्रयोग कर निम्नानुसार आदेश प्रसारित किया है। 1. जिला अंतर्गत दुकानों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के संचालक/ मालिक / व्यापारी रस्सी के माध्यम से अथवा चूने के गोले बनाकर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराया जाना तथा सेनेटाइजर की व्यवस्था करना सुनिश्चित करें, साथ ही दुकानों व प्रतिष्ठानों में आने वाले ग्राहकों/ व्यक्तियों के लिये मास्क का इस्तेमाल प्रतिष्ठान द्वारा सुनिश्चित कराना अनिवार्य होगा। 2. खुले मैदान/स्थान में आयोजित होने वाले समस्त सामाजिक/शैक्षणिक / राजनैतिक/ धार्मिक / खेल/मनोरंजन/सांस्कृतिक कार्यक्रम जिनमें 100 से अधिक व्यक्ति शामिल होंगे ऐसे कार्यक्रम की पूर्व अनुमति संबंधित अनुविभागीय दण्डाधिकारी से प्राप्त करना आवश्यक होगा। 3. जिले में होली के जुलूस/गैर/मेले आदि के आयोजन प्रतिबंधित रहेंगे। 4. कोविड-19 संक्रमण के हॉट स्पॉट क्षेत्रों से भिण्ड जिले में आने वाले सभी व्यक्तियों व यात्रियों को यथासंभव शीघ्र निकटस्थ फीवर क्लीनिक पर जांच कराना आवश्यक होगा। उक्त आदेश का अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) समस्त जिला भिण्ड, थाना प्रभारी (समस्त) जिला भिण्ड एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी समस्त जिला भिण्ड अक्षरशः कठई से पालन कराना सुनिश्चित करेंगे तथा आदेश का उल्लंघन करने की दशा में संबंधित के विरुद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा 188 तथा अन्य अधिनियमों के अन्तर्गत दण्डात्मक कार्यवाही करना सुनिश्चित करेंगे। यह आदेश भिण्ड जिले में निवासरत प्रत्येक नागरिक को सम्यक रूप से व्यक्तिगत तामील कराया जाना संभव नहीं है अतः सार्वजनिक माध्यमों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सामाचार पत्रों के माध्यम से सर्व साधारण को अवगत कराया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक जिला भिण्ड, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत जिला भिण्ड, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) समस्त जिला भिण्ड, मुख्य नगर पालिका अधिकारी समस्त जिला भिण्ड एवं श्रम अधिकारी जिला भिण्ड अपने अपने विभागीय माध्यमों से उक्त आदेश का व्यापक प्रचार-प्रसार कराना सुनिश्चित करें। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होकर अन्य आदेश तक लागू रहेगा।

भाजपा ने चलाया कोविड-19 टीकाकरण अभियान

मोहन मांडवी
पुष्पांजली टुडे न्यूज ग्वालियर
 भारतीय जनता पार्टी गोहद द्वारा कोविड 19 जैसी महामारी से निपटने के लिए शासकीय अस्पताल में स्वदेशी कोविड 19 का टीकाकरण अभियान चलाकर वरिष्ठजनों को कोविड का टीका लगवाया व नागरिकों से अपील की अधिक से अधिक संख्या में कोविड का टीका लगवाकर इस महामारी को जड़ से खत्म करें साथ ही वरिष्ठजनों को बताया कि टीकाकरण के साथ इस वायरस से बचने के लिए शारीरिक दूरी का पालन करना है, मास्क आवश्यक रूप से पहनना है व समय समय पर हाथों को साफ करना है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने एक नारा दिया है कि दवाई भी और कड़ई भी इस का पालन सभी नागरिकों को करना है। कामत, प्रदीप भारद्वाज, सौरभ कौशल, मदन श्रीवास, राजीव व्यास, केपी राठी, इंदल गुर्जर, भदोले, गौरव राज सोनी, लला हरिओम, धर्मेन्द्र दुबे, विनोद बोहरे, महेश पांडेय, अविनाश कुशवाह राजेश नागर, विधाराम माहोर उपस्थित रहे।



शेजवार, जुगल सोनी, विक्रम जैन, आशीष शर्मा, प्रमोद यादव, रामसिया जाटव, भीकम

सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद सिंह का दौरा कार्यक्रम

पुष्पांजली टुडे पंकज त्रिपाठी
 भिण्ड। सहकारिता एवं लोक सेवा प्रबंधन विभाग के मंत्री डॉ अरविंद सिंह भदौरिया जिले के भ्रमण पर पधार रहे हैं। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद सिंह भदौरिया 20 मार्च 2021 को दोपहर 3 बजे भोपाल से कार द्वारा चलकर रात्रि 10 बजे भिण्ड आएंगे एवं विश्राम भिण्ड में ही करेंगे। सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद सिंह भदौरिया 21 मार्च 2021 को प्रातः 7.30 बजे पावई माता मंदिर में आयोजित यज्ञ में सम्मिलित होंगे। इसके बाद प्रातः 9.30 बजे ग्राम टीकरी में डॉ भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा का अनावरण करेंगे। सहकारिता मंत्री प्रातः 11 बजे कीर्ति स्तम्भ परिसर प्रायवेट बस स्टैण्ड भिण्ड में संस्कृति भारतीय द्वारा आयोजित कार्यक्रम जनपद सम्मेलन में सम्मिलित होंगे एवं प्रातः 11.30 बजे संस्कृति मैरिज गार्डन बाईपास रोड भिण्ड में शैक्षणिक दक्षता मूल्यांकन एवं गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम व शिक्षकों के सम्मेलन में भाग लेने के उपरांत दोपहर 12.30 बजे भिण्ड से ग्वालियर के लिए कार द्वारा प्रस्थान करेंगे।



खेतिहर मजदूरों और किसानों के सम्मान से आचार्य आनंद क्लब का

पुष्पांजली टुडे न्यूज केशव पांडित
अम्बाह। मध्य प्रदेश राज्य आनंद संस्थान की निर्देश पर विश्व खुशहाली दिवस को सप्ताह भर मानने की अभिनव पहल करते हुए आचार्य आनंद क्लब द्वारा गांव मिन्हेड़ा-खरवाई के हार में पहुंच कर, खेतों पर काम करने वाले किसानों और मजदूरों को एकजुट कर उनको शाल ओढ़कर आयोजक - संयोजक डॉ सुधीर आचार्य, जिला संपर्क व्यक्ति बालकृष्ण शर्मा, अरविन्द मावई, मनोज पांडित, दुष्यंत सिंह तोमर, सुजाता तोमर, श्याम सिकरवार ने सम्मान किया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए जिला नोडल अधिकारी रामकुमार सिंह तोमर ने कहा कि 30 मार्च को विश्व में हैप्पीनेस डे अर्थात् खुशहाली दिवस के रूप में मनाया जाता है लेकिन आचार्य आनंद क्लब द्वारा इसे सप्ताह भर मनाए जाने का निर्णय लिया गया है 20 मार्च से 26 मार्च तक मुर्ना जिले की सभी तहसीलों में इसके अंतर्गत अनेक आयोजन होंगे। जिसकी शुरुआत आज यहाँ से की गई है। कार्यक्रम में इस अवसर पर राशियों अधिकारी विजय शर्मा एआईटीएम कॉलेज के संचालक हर्देद शर्मा भी मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन और आभार आचार्य आनंद क्लब के सचिव मनोज पांडित ने किया। इस मौके पर एकत्रित ग्रामीण जनों ने अपने-अपने खुशहाली के अनुभव साझा की।

दिल्ली आवास पर कर्नाटक से राजस्थानी प्रवासियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की

नारायणलाल सैणचा ब्यूरो चीफ बंगलूर पुष्पांजली टुडे न्यूज ग्वालियर
नई दिल्ली। आज दिल्ली आवास पर कर्नाटक से राजस्थानी प्रवासियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल ने कर्नाटक में गिरवी व्यापार क्षेत्र में राजस्थानी व्यापारियों को होने वाली विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। प्रतिनिधिमंडल को आश्चर्य कि इस संबंध में कर्नाटक मुख्यमंत्री जी को समस्याओं से अवगत करवा कर त्वरित निदान हेतु आग्रह करेंगे इस कार्यक्रम में बाबुलाल सोलंकी फाउलाल परिहारीया छेलाराम काग बाबुलाल राठौड़ सहित अन्य व्यापारी मौजूद रहे।

कलेक्टर ने रोजगार मेले को लेकर ली औद्योगिक इकाईयों के स्वामी

प्रतिनिधियों की बैठक दैनिक पुष्पांजली टुडे पंकज त्रिपाठी
भिण्ड (मालनपुर)। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने मालनपुर के विकास भवन में 24 मार्च 2021 को लगने वाले जिला स्तरीय रोजगार मेले के संबंध में औद्योगिक इकाईयों के स्वामी/प्रतिनिधियों की बैठक ली। बैठक में पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह, कमाण्डेंट एसएफ अमित सुरेश सोलानी, एसडीएम गोहद सुभम शर्मा, जीएम डीआईसी मालनपुर आशाराम रजक, भिण्ड एससी रुसिया, विभिन्न औद्योगिक इकाईयों के स्वामी/प्रतिनिधि, रोजगार अधिकारी के अलावा अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने 24 मार्च 2021 को लगने वाले मेले के संबंध में औद्योगिक इकाईयों के स्वामियों/प्रतिनिधियों से कहा कि आप लोग जिला स्तरीय रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है। उसमें अपने-अपने स्टॉल लगाकर भिण्ड के अधिक से अधिक युवाओं की भर्ती कर उनको रोजगार उपलब्ध कराएँ। राज्य शासन की मंशानुसार प्रत्येक माह प्रदेश में 1 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की दशा में कहा कि आपकी इकाई में कितने कितने पद रिक्त हैं इसकी जानकारी जिला रोजगार अधिकारी को चयन कर रोजगार उपलब्ध कराएँ। उन्होंने कहा कि सकते हैं। उन्होंने कहा कि आपने भर्ती के लिए जो प्लान तैयार किया हो, उसे जिला रोजगार अधिकारी को उपलब्ध कराएँ। जिला रोजगार मेले में अधिक से अधिक इकाईयाँ आएँ, ताकि ज्यादा से ज्यादा भिण्ड के लोगों को रोजगार मिल सके। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने सीएसआर फण्ड के संबंध में जानकारी प्राप्त की और कहा कि सीएसआर फण्ड को आप लोग जिले के लिए किस क्षेत्र में क्या-क्या कार्य कर सकते हैं, जिसका प्लान तैयार किया जाए। बैठक में कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने अपना मोबाईल नम्बर उपस्थित औद्योगिक इकाईयों के प्रतिनिधियों से कहा कि जब भी हमारे सहयोग की आवश्यकता हो आप हमसे बात कर सकते हैं। प्रशासन हमेशा सहयोग के लिए तैयार है। कलेक्टर एवं एसपी ने मालनपुर पीएलआर फैक्ट्री का किया निरीक्षण-कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस, पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह, कमाण्डेंट एसएफ अमित सुरेश सोलानी ने मालनपुर स्थित पुज लाईड रक्षा सिस्टम प्रा.लि.कं.का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम गोहद सुभम शर्मा, जीएम डीआईसी मालनपुर आशाराम रजक, भिण्ड एससी रुसिया एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

गोरमी ब्लॉक के अध्यापक संवर्ग अध्यक्ष ने बुलाई भिंड में बैठक

पुष्पांजली टुडे न्यूज ग्वालियर रिपोर्टर संतोष सिंह भदौरिया
भिंड। गोरमी तहसील के अंतर्गत आने वाले समस्त अध्यापक संवर्ग के सभी शिक्षकों कि कल दिनांक 21.03.2021 को शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार हेतु बैठक का आयोजन सम्मेलन में उपस्थिति होने की अपील की। यह सूचना गोरमी ब्लॉक संवर्ग अध्यापक के अध्यक्ष पाराशर द्वारा दी गई। मास्क लगाकर व सोशल डिस्टेंस का पालन करने की भी अपील की। स्थान-संस्कृति मैरिज गार्डन एमजेएस कॉलेज के पास (बायपास रोड) भिण्ड, समय -10.30 बजे निवेदक-कुसुमकान्त पाराशर (ब्लॉक अध्यक्ष)।

बैवफा चाय वाला
 प्रेमी जोड़ों के लिये 20 रु. की चाय
 प्यार में घोषा स्वाये लोगो के लिये 15 रु. की चाय
 कोजी माईयों के लिये फ्री चाय
 चाय दूसरी ऐसी चीज है... जिससे आँसे खुलती है...
 थोसा आज भी पहले 1 नवंबर पर है...

वानिकी विकास योजनाओं से संवर रहा है मध्यप्रदेश का ग्रामीण परिवेश

पंकज त्रिपाठी स्टेट ब्यूरो चीफ दैनिक पुष्पांजली टुडे

भोपाल। मध्यप्रदेश में वनों के संरक्षण और संवर्धन के लिए की जा रही प्रभावी पहल के चलते वनों के साथ-साथ उन पर आश्रित आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को वानिकी विकास के जरिए समृद्ध किया जा रहा है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में पिछले एक साल में वनों की सुरक्षा और विकास के साथ-साथ वनों पर आश्रित वनवासियों के कल्याण की नई इबारत लिखी गई है। प्रदेश में वन-जन को समन्वित कर वानिकी में भागीदारी का अंश बढ़ाने के साथ ही जन की सक्रियता बढ़ाने के उद्देश्य से संयुक्त वन प्रबंधन की विचारधारा को सशक्त रूप से अपनाया गया है। संयुक्त वन प्रबंधन के लिए 9784 ग्राम वन, 4773 वन सुरक्षा और 1051 इको विकास समितियाँ गठित हैं। इनके माध्यम से करीब 47 हजार वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्रों का प्रबंधन किया जा रहा है।

संयुक्त वन प्रबंधन से समृद्ध समितियाँ- वन समितियों में 33 फीसदी महिलाओं की सदस्यता आरक्षित की गई है। साथ ही अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पद में से एक पर महिला की नियुक्ति अनिवार्य की जाकर महिला सशक्तिकरण को प्रभावी बनाया गया है। वन खंड की सीमा से 5 कि.मी. दूरी तक स्थित ग्रामों में गठित वन सुरक्षा समिति सघन वन क्षेत्रों में अवैध कटाई, चराई और अग्नि से क्षेत्र की सुरक्षा का काम करती है। इसके एवज में उन्हें आवंटित क्षेत्र से समस्त लघु वनोपज, रॉयल्टी मुक्त निस्तार एवं काष्ठ विदोहन का 20

प्रतिशत लाभार्जन दिया जाता है। जैव विविधता के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्यान और अमर्यापन के बफर क्षेत्र की सीमा से 5 कि.मी. की परिधि में स्थित ग्रामों में इको विकास समिति गठित है। यह समितियाँ सामाजिक-आर्थिक उथ्थान के कार्य में संलग्न हैं। जिलास्तर पर काष्ठ विदोहन से हुए शुद्ध लाभ 20 फीसदी वन प्रबंधन समितियों को 22 करोड़ 56 लाख रुपये की राशि दी गई। बाँस कटाई में संलग्न श्रमिकों को बाँस विदोहन से प्राप्त शुद्ध लाभ की राशि शत-प्रतिशत दी जाती है। इसमें 11 करोड़ 39 लाख रुपये का लाभार्जन दिया जा चुका है। इस तरह कुल 33 करोड़ 95 लाख रुपये का लाभार्जन वितरित किया जा चुका है। प्रदेश के किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि फसलों के साथ बाँस रोपण एक बेहतर विकल्प के रूप में लोकप्रिय हुआ है। इस वित्त वर्ष में 3597 किसानों ने 3228 हेक्टेयर क्षेत्र में बाँस रोपण किया। जिस पर उन्हें पौने 7 करोड़ रुपये से ज्यादा का अनुदान दिया गया। स्व-सहायता समूहों को आत्म-निर्भर बनाने के लिए मनरेगा में 83 स्व-सहायता समूह के माध्यम से 1020 हेक्टेयर क्षेत्र में बाँस रोपण किया गया। अन्य योजनाओं में भी 1248 हेक्टेयर क्षेत्र में बाँस रोपण किया गया। निजी क्षेत्र में मंजूरी की गई 13 बाँस प्र-संस्करण इकाइयों में से 9 इकाई प्रारंभ हो चुकी हैं। इन इकाइयों को 1 करोड़ 68 लाख रुपये का अनुदान वितरित किया गया। संग्रहकों को 397 करोड़ रुपये की मिली मजदूरी लघु वनोपज संघ द्वारा एकलव्य शिक्षा विकास योजना

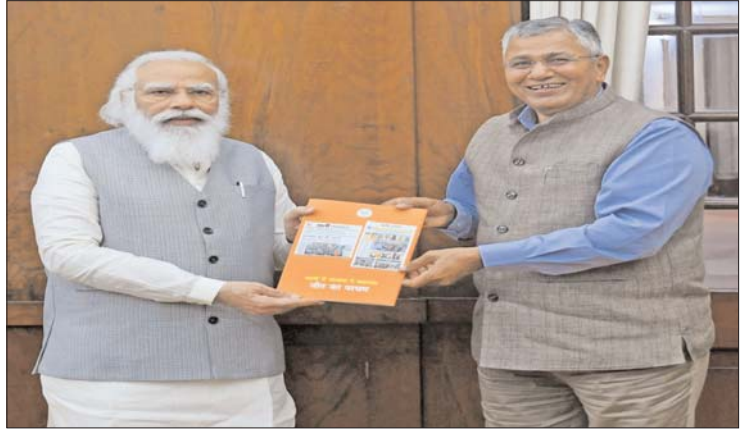
के जरिए तेन्दुपा संग्रहकों, फड़-मुंशी और प्रबंधकों के बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों में सहायता प्रदान कर उनका भविष्य सँवारा जा रहा है। इस वित्त वर्ष में शैक्षणिक सत्र 2019-20 के लिए अब तक करीब एक हजार छात्र-छात्राओं को 9 करोड़ 88 लाख से ज्यादा की सहायता दी गई। प्रदेश में तेन्दुपा संग्रहकों में 33 लाख संग्रहक जुड़े हैं। इनमें 44 फीसदी महिलाएँ हैं। अधिकतर संग्रहक अनुसूचित जाति/जनजाति और पिछड़ा वर्ग के हैं। इन्हें लगभग एक माह का रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। इन संग्रहकों को आर्थिक संवर्धन देने के लिए तेन्दुपा संग्रहण का पारिश्रमिक तथा प्रोत्साहन पारिश्रमिक बोनस के रूप में दिया जाता है। पिछले वर्ष 15 लाख 88 हजार मानक बोरा तेन्दुपा संग्रहीत कर संग्रहकों को 397 करोड़ रुपये का पारिश्रमिक दिया गया। वर्ष 2018 में संग्रहीत और तेन्दुपा के व्यापार से हुए शुद्ध लाभ में से 183 करोड़ 31 लाख की राशि प्रोत्साहन पारिश्रमिक के रूप में दी गई। मुख्यमंत्री तेन्दुपा संग्रहण सहायता योजना में इस वित्त वर्ष में अब तक 2 करोड़ 26 लाख 20 हजार रुपये की सहायता राशि वितरित की जा चुकी है।

32 लघु वनोपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित- लघु वनोपज के संग्रहकों द्वारा संग्रहीत वनोपज का प्राथमिक उपचार कर सही मूल्य प्राप्त हो सके, इसके लिए वन-धन विकास योजना के तहत ट्राइफेड द्वारा पहले चरण में 13 जिलों में 86 वन-धन विकास केन्द्र स्थापित किए गए हैं। इनमें 10 स्व-सहायता समूह क्लस्टर का

एक केन्द्र है। इसमें प्रत्येक स्व-सहायता समूह के 30 सदस्य रहे गए हैं। इससे 50 करोड़ रुपये का व्यापार संभावित है। प्रदेश में 32 लघु वनोपजों का समर्थन मूल्य निर्धारित किया गया है। खास बात यह है कि भारत सरकार द्वारा निर्धारित दर के समकक्ष और कुछ वनोपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य भारत सरकार की दरों से भी ज्यादा है। लघु वनोपज संग्रहकों द्वारा संग्रहीत वनोपज का प्राथमिक प्र-संस्करण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा उचित मूल्य दिलाने के लिए यह अभिव्य योजना शुरू की गई है। एक वन-धन केन्द्र में 300 संग्रहक हैं। राज्य लघु वनोपज संघ, क्रियान्वयन एजेन्सी है। प्रदेश में वानिकी वृत्तों की 170 रोपणियाँ हैं। इन रोपणियों से 3 करोड़ 42 लाख पौधों की बिक्री और 50 लाख सगौन रुट-शूट की नीलामी से 4 करोड़ 99 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है। इस वर्ष रोपण के लिए पौधा तैयारी का कार्य भी प्रगति पर है। रोपणियों के पौधों को ऑन-लाईन संधारण के लिए नर्सरी मैनेजमेंट विकसित किया गया है। कुछ रोपणियों में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाए जाकर उनकी सुरक्षा और निगरानी की जा रही है। वनोपज की माँग और आपूर्ति के बढ़ते अन्तर को कम करने और किसानों की आर्थिक समृद्धि के लिए निजी भूमि पर वनीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष 2020 में गैर वन क्षेत्रों में विभिन्न प्रजाति के करीब सवा 6 लाख पौधों का रोपण कराया गया। आम लोगों को एम.पी. ऑन-लाईन के माध्यम से भी पौधे उपलब्ध कराए जाने की व्यवस्था की गई है। वनों की संवहनीयता बनाए

रखने के लिए बिगड़े वनों का सुधार, वृक्षारोपण आदि कार्य किए जाते हैं। वर्ष 2020 में करीब पौने 6 करोड़ पौधे लगाए गए। प्रदेश सरकार द्वारा अन्य राज्य सरकारों से संपर्क कर प्रदेश के बिगड़े वनों के सुधार में निवेश लाने का प्रयास किया जा रहा है। अण्डमान एवं निकोबार प्रशासन ने मध्यप्रदेश सरकार से बिगड़े वनों के सुधार के लिए वैकल्पिक वृक्षारोपण करने का अनुरोध किया है। इसके लिए तैयार की गई परियोजना से तकरीबन 40 हजार से अधिक हेक्टेयर बिगड़े वनों के सुधार में 1500 करोड़ रुपये उपलब्ध होंगे और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। प्रदेश में वनों की अवैध कटाई को रोकने के लिए वन विभाग द्वारा प्रतिबद्धता से कार्य किया जा रहा है। बीट प्रभारी के अलावा परिवेश सहायक से लेकर वन मण्डलाधिकारी स्तर तक के अधिकारी रोस्टर अनुसूचक वनों के अवैध रूप से कटे वृक्षों की जाँच कर आरोपियों के विरुद्ध कार्यवाही करते हैं। अपराधियों से निपटने के लिए 3157 बन्दूक और 286 रिवाल्वर उपलब्ध कराए गए हैं। चौदह अति संवेदनशील वन मण्डलों में विशेष सशक्त बल की 3 कंपनियों के जवान, वन, वन्य-प्राणी एवं वन कर्मियों की सुरक्षा करते हैं। सभी 16 वन क्षेत्रों में डडन दस्ता दल गठित है, जो समय-समय पर स्थानीय अमले को अतिरिक्त सुरक्षा-सहायता प्रदान करता है। राज्य में मुख्य रूप से साल, बाँस तथा अन्य मिश्रित प्रजातियों के वृक्ष मौजूद हैं। वानिकी वर्ष 2020-21 में अब तक एक लाख घन मीटर इमारती काष्ठ, 5 हजार

जलाऊ चूड़े और 15 हजार नोशनल टन विक्रय इकाई बाँस का उत्पादन हुआ है। वनों की सीमा से 5 कि.मी. की परिधि में बसे परिवार को ही घरेलू उपयोग के लिए बाँस, छोटी इमारती लकड़ी (बल्ली) हल, बक्खर बनाने की लकड़ी तथा जलाऊ लकड़ी रियायती दरों पर दी जाती है। स्वयं के उपयोग के लिए वनों से सिरबोझ द्वारा गिरी पड़ी, मरी और सूखी जलाऊ लकड़ी की सुविधा भी दी जा रही है। वर्ष 2020 में निस्तार के लिए 19 लाख 61 हजार नग बाँस, 16 हजार बल्ली और 51 हजार जलाऊ चूड़े ग्रामीणों को उपलब्ध कराए जाने के साथ ही 9 करोड़ 12 लाख रुपये की रियायत भी दी गई। प्रदेश में वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से इस वित्त वर्ष में जनवरी 2021 तक की स्थिति में 1010 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हो चुका है। कोरोना जैसी महामारी और लॉक डाउन के रहते राजस्व अर्जित करने के मामले में यह उपलब्धि विशेष मार्यने रखती है। वन संरक्षण अधिनियम 1980 के अंतर्गत वर्ष 2020 में 46 प्रकरणों में भारत सरकार से 2685.547 हेक्टेयर वन भूमि की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इसी अवधि में 15 प्रकरण में 1117.239 हेक्टेयर वन भूमि व्यपवर्तन की सैद्धान्तिक सहमति भी प्राप्त हो चुकी है। अमले वित्तीय वर्ष में विभिन्न वानिकी कार्य वृक्षारोपण, पुनर्त्पादन, उत्पादन, वन सुरक्षा, लघु वनोपज का संग्रहण, भण्डारण एवं इको पर्यटन, होम स्टे आदि से करीब पौने 8 लाख व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराने का संकल्प है।



प्रधानमंत्री मोदी के साथ पाली सांसद पी.पी. चौधरी ने की मुलाकात

पुष्पांजली टुडे न्यू ग्वालियर नई दिल्ली। पाली सांसद और पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री पीपी चौधरी ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर संसदीय क्षेत्र पाली में विकास कार्यों के सम्बन्ध में चर्चा की। मुलाकात में सांसद चौधरी ने प्रधानमंत्री मोदी को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते आत्मनिर्भर भारत बजट, कोरोना प्रबंधन और देश के सबसे टीकाकरण अभियान के प्रति आभार जताया। विभिन्न विकास कार्यों की संभावनाओं से कराया अलग-अलग प्रधानमंत्री मोदी के साथ हुई विचार-भेंट में सांसद चौधरी ने अपने संसदीय क्षेत्र में कपड़ा नगर पाली के लिए मेगा टेक्सटाइल पार्क, पश्चिमी

राजस्थान के विकास के लिए पश्चिमी डेल्टाकेटड फ्रेट कोरीडोर परियोजना के अन्तर्गत मारवाड़ जंक्शन स्टेशन पर कन्टेनर डिपो व मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क की स्थापना के साथ-साथ राजस्थान में आई.टी.आई.आर. की स्थापना की संभावनाओं के बारे में अवगत कराया सांसद चौधरी ने प्रधान मंत्री जी से पाली की जीवन रेखा जंवाई बांध के पुर्नभरण की रखा मांग सांसद ने पाली जिले की वर्षों पुरानी पेयजल समस्या को दूर करने के लिए अपनी अति महत्वाकांक्षी परियोजना को मूर्त रूप देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी से जंवाई बांध पुर्नभरण परियोजना की सहमति हेतु सम्बन्धित विभाग को

उचित दिशा-निर्देश प्रदान करने के आग्रह करते हुए बताया कि पश्चिमी राजस्थान का प्रमुख पेयजल स्रोत जंवाई बांध है, लेकिन पिछले कई वर्षों समूचे मारवाड़ की व्याप्त बुझाना वाला जंवाई बांध पाली जिले की भी व्याप्त बुझा नहीं पा रहा है। गर्मी में वाटर ट्रेन की सहायता से पाली जिलेवासियों को पेयजल पिछले कई वर्षों से उपलब्ध कराया जा रहा है। ऐसे में सावरमती बेसिन के अधिषेध प्रवाह जो कि अरबसागर में जाता है, उस अधिषेध जल को जंवाई नदी की ओर मोड़ दिया जा सकता है। इससे पाली, जालोर, सिरोंही और अन्य आसपास के शहरों में पौने के पानी की समस्या को हल करने में मदद मिलेगी।

पर्यावरण संरक्षण हेतु किया गया जन समुदाय को जागरूक

मुरैना। मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग मुरैना द्वारा संचालित बीएसडब्ल्यू पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों द्वारा प्रायोगिक कार्य के तहत विभिन्न समुदाय आधारित जन जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। जिसके तहत बीएसडब्ल्यू तृतीय वर्ष की प्रतिभागी शायरा खान द्वारा ग्राम जोरी में जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें बीएसडब्ल्यू पाठ्यक्रम के मॉडर सदीप सेंगर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती रामबेटी सिकरवार एवं ग्राम जोरी की महिलाएँ, किशोरी बालक- बालिका व बच्चे उपस्थित हुए। उपस्थित जन समुदाय को छात्रा शायरा खान द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु समझाइश दी गई। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के बारे में विस्तार से बताया गया एवं उन्हें कहा गया कि हमें हर प्रकार से अपने आसपास के वातावरण को हरा भरा रखने हेतु पौधारोपण करते रहना चाहिए, क्योंकि पेड़ पौधों से हमें ऑक्सीजन प्राप्त होती है। हमें किसी भी तरह के पेड़ पौधों को नष्ट नहीं करना चाहिए, हर व्यक्ति को अपने जीवन काल में पेड़ लगाने चाहिए। पेड़ पौधों से हमें छाया के



साथ-साथ मीठे फल एवं विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियाँ प्राप्त होती हैं। कई पौधे हमारे जीवन में बहुत उपयोगी होते हैं, इन पौधों के

फूलों पत्तियों एवं फलों को से कई प्रकार की औषधियों के रूप में घरेलू नुस्खे तैयार कर बीमारियों से बचा जा सकता है। इस अवसर

पर मॉडर सदीप सेंगर द्वारा भी जनसमुदाय को संबोधित करते हुए पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूक किया गया।

जिला क्रायसिस मैनेजमेन्ट की बैठक 22 मार्च को

मुरैना। जिले में कोरोना संक्रमण पर नियंत्रण हेतु चर्चा एवं सुझाव हेतु जिला स्तरीय संकट प्रबंधन समूह (जिला क्रायसिस मैनेजमेन्ट) की बैठक 22 मार्च को सायं 5 बजे नवीन कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में आयोजित की गई है। कलेक्टर श्री बी. कार्तिकेयन ने कहा है कि संकट प्रबंधन समूह की बैठक में राजनैतिक सदस्य, जनप्रतिनिधि एवं शासकीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहेंगे। जिसमें पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह, सबलगढ़ विधायक श्री बैजनाथ सिंह कुशवाहा, जिला विधायक श्री सूबेदार सिंहा, सुमावली विधायक श्री अजय सिंह कुशवाहा, मुरैना विधायक श्री राकेश माथ, दिमनी विधायक श्री रवीन्द्र सिंह तोमर, अम्बाला विधायक श्री कमलेशा जाटव, जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती गीता इंदर हर्षाना, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री योगेशपाल गुप्ता, पूर्व मंत्री श्री रूतम सिंह, श्री एदल सिंह कंधाना, श्री गिराज डंडोटिया, पूर्व विधायक श्री रघुराज सिंह कंधाना, श्री सत्यपाल सिंह सिकरवार, पूर्व विधायक एवं अध्यक्ष केन्द्रीय सहकारी बैंक श्री शिवमंगल सिंह तोमर, श्री गजराज सिंह सिकरवार, पूर्व महापौर श्री अशोक अर्गल, पूर्व सभापति श्री अनिल गोयल, पूर्व मंत्री श्री मुंशी लाल, श्री दीपक शर्मा, श्री विष्णू अग्रवाल, डॉ. रमेश कुशवाहा, श्री रामप्रकाश राजौरिया, श्री दिनेश सिंह गुर्जर, श्री नागेश तिवारी, श्री काशी मोहम्मद अस्मरब, सचिव रेडक्रॉस, जन अधिधीन परिसर, अध्यक्ष व्यापार मंडल, अध्यक्ष औद्योगिक क्षेत्र, अध्यक्ष कपड़ा व्यापारी, अध्यक्ष किराना व्यवसाय संघ उपस्थित होकर सुझाव प्रस्तुत करेंगे।

जिले में राज्य आनंद संस्थान इकाई ने खुशहाली दिवस मनाया



मुरैना। राज्य आनंद संस्थान इकाई मुरैना ने 20 मार्च शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय खुशहाली दिवस के रूप में शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मुरैना में "अल्पविराम कार्यक्रम" के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम के नोडल जिला पेशन अधिकारी आरकेएस तोमर की

उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में आरकेएस तोमर ने बताया कि आज की भाग दौड़ की जिदगी में स्वयं को जानना, सकारात्मक सोच विकसित

उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में आरकेएस तोमर ने बताया कि आज की भाग दौड़ की जिदगी में स्वयं को जानना, सकारात्मक सोच विकसित



सफाई कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी

मुरैना। नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर जगदीश टैगोर ने निगम के 47 वार्डों के सफाई दरोगाओं को एवं सफाई कर्मियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं, कि सफाई कार्य में कोताही बर्दाश्त नहीं होगी। जो भी व्यक्ति सफाई कार्य से अनुपस्थित पाए जाएं, उनके खिलाफ कठोर दंडात्मक कार्रवाई होगी। जिसमें स्वास्थ्य अधिकारी ने गत दिवस नगर

निगम के विभिन्न वार्डों का औचक निरीक्षण किया। जिसमें वार्ड क्रमांक 37, 38, 39 तथा एमएस रोड सहित अन्य स्थानों का निरीक्षण किया। स्वास्थ्य अधिकारी श्री जगदीश टैगोर ने वार्ड क्रमांक 37 के राकेश पुत्र छोटे सिंह, उपा पत्नी राजेंद्र, रविंद्र पुत्र राहुल पुत्र राम अवतार जो अनुपस्थित पाए गए थे। उनके खिलाफ वेतन काटने की कार्रवाई की जा रही है।

निगम के विभिन्न वार्डों का औचक निरीक्षण किया। जिसमें वार्ड क्रमांक 37, 38, 39 तथा एमएस रोड सहित अन्य स्थानों का निरीक्षण किया। स्वास्थ्य अधिकारी श्री जगदीश टैगोर ने वार्ड क्रमांक 37 के राकेश पुत्र छोटे सिंह, उपा पत्नी राजेंद्र, रविंद्र पुत्र राहुल पुत्र राम अवतार जो अनुपस्थित पाए गए थे। उनके खिलाफ वेतन काटने की कार्रवाई की जा रही है।

वैक्सिन वाले दिन कोविड का लक्ष्य पूर्ण नहीं हुआ तो वेतन नहीं दूंगा: कलेक्टर श्री कार्तिकेयन

मुरैना। प्रदेश सरकार की मंशा है कि लोगों को समय पर शतप्रतिशत कोविड वैक्सिन लगे, इसके लिये प्रत्येक सप्ताह में 4 दिन चिन्हित किये गये हैं। जिसमें सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शनिवार निर्धारित किये हैं। इन दिनों में जिले से प्रत्येक सीएससी, पीएससी के लिये लक्ष्य निर्धारित किया जायेगा, उस लक्ष्य के अनुसार टीकाकरण उन व्यक्तियों के किया जाये, जो चिन्हित किये जा चुके हैं। जिस दिन लक्ष्य पूर्ण नहीं होगा, उस दिन का वेतन उस बीएमओ, सीडीपीओ, एएनएम, आशा कार्यकर्ता, सुपरवाइजर, ग्राम पंचायत सचिव, ग्राम रोजगार सहायक को नहीं दिया जायेगा। ये निर्देश कलेक्टर श्री बी. कार्तिकेयन ने नवीन कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में चल रही कोविड वैक्सिन समीक्षा के दौरान अधिकारियों को दिये। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री रोशन कुमार सिंह, नगर निगम कमिश्नर श्री अमरसत्य गुप्ता, महिला बाल विकास, सीएमएचओ, सिविल सर्जन, सीडीपीओ एवं बीएमओ तथा वरुंचल कॉम्प्रेस के माध्यम से जिले के समस्त एसडीएम, सीएमओ एवं जनपद सीईओ जुड़े हुये थे। कलेक्टर श्री बी. कार्तिकेयन ने कोविड वैक्सिन की समीक्षा। समीक्षा के दौरान जिले का वैक्सिनेशन के दिन वाला लक्ष्य पूर्ण नहीं हो पा रहा था। इस पर कलेक्टर ने नाराजगी व्यक्त करते हुये 20 मार्च शनिवार को 29 सेंटेंटर पर 8 हजार का लक्ष्य प्रदान किया और सोमवार के दिन 10 हजार का लक्ष्य सौंपा है। कलेक्टर ने टीकाकरण लक्ष्य के अनुसार न होने पर उन्होंने बीएमओ पहलवाइड कलेडर यादव का 15 दिवस का वेतन काटने तथा कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि फ्रंट लाइन वाले कर्मचारी जो कोविड में टीकाकरण का कार्य कर रहे हैं, वे अपने स्वास्थ्य कर्मी हैं, उन्हें का दूसरा जोग नहीं लगवा पा रहे हैं। यह मात्र 55 प्रतिशत तक पहुंचा है। यह स्थिति में बर्दाश्त नहीं करूंगा। कलेक्टर ने बीएमओ कैलास की समीक्षा की। जिसमें दूसरा डोज 92 प्रतिशत होना था। इस पर कलेक्टर ने कैलास बीएमओ श्री मिश्रा की एक वेतनवृद्धि रोकने के निर्देश दिये। जिसमें दूसरा डोज का वेतन काटने की समीक्षा की। जिसमें दूसरा डोज का वेतन काटने तथा कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। समीक्षा बैठक में टी.बी. ऑफीसर डॉ. बीएल मौर्य बैठक से सूचना होने के बावजूद भी उपस्थित नहीं हुये। इस पर कलेक्टर ने एक दिन का वेतन काटने, कारण बताओ नोटिस तथा बगैर कलेक्टर की अनुमति के मार्च माह का वेतन जारी नहीं करने के निर्देश दिये। समीक्षा में कलेक्टर ने जिले के समस्त सीडीपीओ को निर्देश दिये हैं कि जिसको जो जिम्मेदारियाँ दी गई हैं, वे प्लानिंग के साथ तैयारी करें। जिसमें जिस व्यक्ति को टीकाकरण कराना है, उस व्यक्ति को पहले से ही सूचना कर दी जाये। इसकी सूची समस्त आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता, एएनएम, पंचायत सचिव एवं सीडीपीओ और ब्लॉक ऑफीसर पर होनी चाहिए।



वाणी कपूर ने दिखाया अपना गॉर्जियस अंदाज

वाणी कपूर ने हाल ही में कुछ गॉर्जियस तस्वीरें अपने सोशल मीडिया हैंडल पर शेयर किए हैं। वाणी ने लेमन ब्रालेट टॉप पहना और क्लॉट कलर का पैट इसके साथ कैरी किया। वाणी ने दूसरी तस्वीर में गोलड टॉप और मैक्सि स्कर्ट कैरी की है। इस ट्रेस में वाणी काफी अट्रैक्टिव लुक में नजर आ रही हैं। क्वॉक प्रॉट की बात करें तो, वाणी कपूर को साल 2019 में आखिरी बार फिल्म 'वाँ' में देखा गया था। इस फिल्म में वो त्रैलिक रोशन के अपोजिट नजर आई थीं। वहीं, इस फिल्म में टाइगर श्राफ भी लीड रोल में थे। वाणी कपूर को अपकॉमिंग फिल्मों में रणवीर कपूर के साथ 'शमशेरा' और अक्षय कुमार के साथ 'बेल बॉटम' है। इन दोनों स्टार्स के साथ वाणी पहली बार स्क्रीन स्पेस शेयर करेंगी।

साउथ के इस सुपरस्टार ने की ऑटो में सवारी, सोशल मीडिया पर वायरल हुए

साउथ के सुपरस्टार अजित कुमार को उनकी सादगी के लिए जाना जाता है। तमिल फिल्म उद्योग का एक जाना-पहचाना नाम होने के बावजूद वे जमीन से जुड़े हुए इंसान हैं। उनकी वे सिम्पलिसिटी सोशल मीडिया पर वायरल हो रही उनकी तस्वीरों में देखने को मिल रही है। दरअसल अजित कुछ समय पहले वेनिस की सड़कों पर ऑटो में सवारी करते हुए देखे गए थे। अपने चहेते एक्टर को चुआम लोगों की तरह ऑटो में सफर करता देख उनके फैंस काफी इमोशनल हो गए। उनके लिए ये एक ऐसा पल है जो उन्हें एक्टर के और करीब ले आता है। इसीलिए अपने पसंदीदा स्टार को सम्मान देने के लिए फैंस ने सोशल मीडिया पर द मेन ऑफ द सिम्पलिसिटी टैग टेंड हुआ। इसी के साथ प्रशंसक अजित की ऑटो में बैठे हुए कई तस्वीरें एव वीडियो शेयर कर रहे हैं। हर कोई इसे अलग अंदाज और कैप्शन के साथ पोस्ट कर रहा है। जब भी प्रशंसक अजित की ऐसी अनस्टेडी तस्वीरें या वीडियो देखते हैं तो उनके दिल में एक्टर के लिए प्यार और वंदन जाता है। इसकी झलक सोशल मीडिया पर हो रहे टैगिंग टैग से लगाया जा सकता है। अजित के ऐसे ही एक तस्वीर पर एक फैन ने कमेंट किया, यही वजह है कि उन्हें द मेन ऑफ द सिम्पलिसिटी यानी सादगीपूर्ण व्यक्ति हा जाता है इस युजर के कमेंट को दूसरे लोगों ने जमकर लाइक और शेयर किया। अजित तमिल सिनेमा का एक जाना-माना नाम है।



अनन्या पांडे नजर आई ग्लैमर्स अवतार में

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे के पास इन दिनों फिल्मों की लाइन लगी हुई है। अनन्या के अब चाहने वालों की लिस्ट भी काफी लंबी होती जा रही है। अनन्या अपनी अदाओं से अक्सर फैंस के दिलों को घायल करती रहती हैं। अनन्या के पोस्ट का फैंस को इंतजार रहता है। हाल में अनन्या धर्मा ऑफिस के बाहर नजर आई हैं। अनन्या के इस दौरान की फोटोज सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं।

अनन्या सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। एक्ट्रेस आए दिन कोई ना कोई पोस्ट अपने फैंस के लिए शेयर करती रहती हैं। हाल ही में अनन्या की कुछ फोटोज सामने आई हैं जिनमें उनका ग्लैमर्स अंदाज साफ देखने को मिल रहा है।

अनन्या पहुंची धर्मा ऑफिस

हाल ही में एक्ट्रेस अनन्या पांडे धर्मा ऑफिस पहुंची थीं। इस दौरान एक्ट्रेस काफी ग्लैमर्स अवतार में नजर आईं। उन्होंने ब्लैक प्रिंटेड कलर की शर्ट इस पहनी हुई थी। इस दौरान एक्ट्रेस काफी प्यारी लग रही थीं।



फैंस इस बात का कयास लगा रहे हैं कि अनन्या के हाथ में किसी नई फिल्म की स्क्रिप्ट थी। साथ ही हो सकता है वह एक बार फिर से करण जोहर के साथ काम करें। अनन्या के इस दौरान की फोटोज तेजी से सोशल मीडिया पर छा रही हैं। फैंस इन फोटोज को काफी ज्यादा पसंद कर रहे हैं।

जल्द विजय देवकोंडा के साथ करेंगी धमाल

अनन्या जल्द ही फिल्म लाइन में विजय देवकोंडा के साथ नजर आएंगी। अनन्या और विजय देवकोंडा पहली बार साथ नजर आने वाले हैं। ऐसे में दोनों के ही फैंस पर्य पर इन स्टार्स को देखने को बेताब हैं। दोनों ही स्टार्स आजकल एक दूसरे की तारीफों के पुल बांधते भी खुब नजर आते हैं। अनन्या कई बार विजय की तारीफ करती नजर आ चुकी हैं। एक्ट्रेस कह चुकी हैं कि वह विजय के साथ काम करके बहुत खुश हैं।

लाइन पुरी जगन्नाथ के निर्देशन में बनी है। उनके पास और एक फिल्म भी है, जो शकुन बजा के निर्देशन में अभिनेत्री दीपिका पादुकोण और सिद्धांत चतुर्वेदी के साथ स्क्रीन साझा करेंगी। अनन्या की इस फिल्म का फैंस को भी इंतजार है, एक्ट्रेस अपने ग्लैमर्स अंदाज के लिए फैंस के बीच फेमस हैं।

भेड़िया के सेट पर वरुण ने बिना टी-शर्ट लगाई दौड़

पिछले कुछ दिनों से लगातार बॉलीवुड की कई फिल्मों की रिलीज डेट की अनाउंसमेंट हो रही है। अब हाल ही में वरुण धवन और कृति सेनन की फिल्म को लेकर अनाउंसमेंट हुई है। दोनों जल्द ही फिल्म भेड़िया में नजर आएंगे। मैडॉक फिल्म्स द्वारा बनाई गई ये फिल्म अगले साल 14 अप्रैल को रिलीज होगी। फिलहाल इस फिल्म की शूटिंग हो रही है। जहां से लगातार वरुण धवन के कुछ वीडियो वायरल हो रहे हैं। हाल ही में वरुण धवन ने अपना खुद का एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। इस वीडियो में वरुण, अरुणाचल प्रदेश की सड़कों पर दौड़ लगाते हुए नजर आ रहे हैं।

इस वीडियो को एक्टर ने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इस वीडियो में वरुण धवन ने टी-शर्ट नहीं पहनी हुई है और वो तेजी से दौड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं।

हाल ही में एक वीडियो सामने आया है, जिसमें आप देख सकते हैं कि कैसे फैंस वरुण के दीवाने हो रहे हैं। वरुण धवन की अगली भेड़िया की शूटिंग इन दिनों अरुणाचल प्रदेश में चल रही है। ऐसे में सागले ग्राउंड में एक्टर के प्रशंसकों ने उनको रोक लिया। फैंस उनकी एक झलक देखने को बेताब दिखे हैं। ऐसे में वरुण ने फैंस को कहा कि आप मुझे शूट (फिल्म शूट करने को एक्टर ने बात कही है) करने दें।

वीडियो में देखेंगे कि एक्टर गाड़ी के ऊपर खड़े होकर फैंस से रिक्वेस्ट करते नजर आ रहे हैं। साथ ही वह लोगों का धन्यवाद भी दे रहे हैं। ये वीडियो रात का है, जिसमें मोबाइल की टार्च की देखने को मिल रही है। दरअसल एक्टर के फैंस ने

उनकी झलक देखने के लिए फिल्म की शूटिंग रोकवा दी थी। सोशल मीडिया पर ये वीडियो बहुत ही तेजी से वायरल हो रहा है। इससे पहले एक्टरनेस कृति सेनन के भी काफी वीडियोज सोशल मीडिया पर छा चुके हैं।

वरुण-कृति की जोड़ी

भेड़िया फिल्म के जरिए वरुण और कृति दोनों दूसरी बार साथ काम करने वाले हैं। इससे पहले दोनों फिल्म दिलवाले में साथ काम कर चुके हैं। इन दोनों के अलावा दीपक डोबरियाल और अभिषेक बनर्जी भी साथ हैं। अभिषेक इससे पहले स्त्री में नजर आ चुके हैं। फिल्म के मोशनल पोस्टर को देखने के बाद फैंस फिल्म को लेकर एक्साइटेड हैं।



बॉयफ्रेंड रॉकी संग मालदीव पहुंची हिना खान

बिग बॉस के घर में कई बार अपने जलवे बिखेर चुकी टीवी की मशहूर एक्ट्रेस हिना खान हमेशा वहां में रहती हैं। हिना बॉलीवुड के साथ-साथ टीवी इंडस्ट्री से भी करीबी रिश्ते रखती हैं। जहां इन इन दिनों एक्ट्रेस वेंकेशन पर हैं। जी हा, हिना हाल ही में ही मालदीव पहुंची हैं। बताया जा रहा है कि एक्ट्रेस मुंबई में बड़े कोरोना कहर को देखते हुए मालदीव घसी गई हैं। जहां वो चिल कर रही हैं। इतना ही नहीं एक्ट्रेस यहां अपने बॉयफ्रेंड रॉकी जलसवाल के साथ पहुंची हैं। जहां इस टिप से एक्ट्रेस ने अपनी खुबसूरत तस्वीरों को सोशल मीडिया पर शेयर किया है। एक्ट्रेस की ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस के फैंस खुब पसंद कर रहे हैं। वहीं इन तस्वीरों में हिना हमें मस्ती करते हुए नजर आ रही हैं। हिना खान मालदीव को खुब पसंद करती हैं। जिस वजह से वो अक्सर मालदीव जाती रहती हैं। जहां उन्होंने अब अपनी इस पुरी टिप से अपनी खुबसूरत तस्वीरों को शेयर किया है। इसके पहले उन्होंने कुछ रील वीडियोज शेयर किए थे, जिसमें वे रात के समय एक रेस्टोरेंट में रॉकी का हाव पकड़े बैठी थीं। साथ ही अपने फैंस को बताया था कि रॉकी उनके लिए कितने खास है हिना खान की वेंकेशन की तस्वीरें सोशल मीडिया पर खुब वायरल हो रही हैं।



मल्लिका शेरवात फिर नजर आई पुराने अंदाज में

मल्लिका शेरवात ने बॉलीवुड की कई फिल्मों में अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाया है। एक्ट्रेस अपने बोलड अंदाज के लिए इंडस्ट्री में जानी जाती हैं। खास बात ये है कि मल्लिका ने अब तक कई छोटी बड़ी फिल्मों में काम किया है। इतना ही नहीं मल्लिका बॉलीवुड इंडस्ट्री के उन सुनिंदा लोगों में से हैं जिन्होंने बॉलीवुड फिल्मों के लिए भी काम किया है। मल्लिका भले काफी समय से फिल्मों में नजर ना आई हों, लेकिन एक्ट्रेस आए दिन अपनी ग्लैमर्स फोटोज फैंस के लिए शेयर करती रहती हैं। हाल ही में मल्लिका ने फैंस को दीवाना करने वाली फोटोज शेयर की हैं। अपनी अदाओं से आग लगाने वाली एक्ट्रेस मल्लिका शेरवात ने अपने करियर की शुरूआत टीवी विज्ञापनों से की थी।

जॉन अब्राहम को लगा बड़ा झटका, रिलीज होते ही ऑनलाइन लीक हुई मुंबई सागा

लॉकडाउन के बाद अब धीरे धीरे जिंदगी सामान्य हो रही है, एक लंबे समय से फिल्में थिएटर में रिलीज नहीं हुई थीं, लेकिन अब मूवीज को भी रफ्तार मिलना शुरू हो गया है। पिछले हफ्ते स्त्री के बाद आज जॉन अब्राहम और इमरान हाशमी की फिल्म मुंबई सागा थिएटर में रिलीज हुई है। इस फिल्म को मिले जुले रिक्वूज मिल रहे हैं। लेकिन इसी बीच मेकर्स को तड़का झटका लगने वाला है। मुंबई सागा ऑनलाइन लीक हो गई है। खबर के अनुसार जॉन अब्राहम स्टार मुंबई सागा भी पायरेसी करने वाली साइट्स का नया शिकार हो गई है।

कमाई पर पड़ेगा असर

फिल्म के ऑनलाइन लीक होने से अब मूवी को कमाई पर असर पड़ सकता है। फिल्मों को पायरेसी सिनेमा इंडस्ट्री के लिए एक बड़ा खतरा है। अब रिलीज के साथ ही फिल्म का लीक होना झटका देने वाला है। अब साफ है



कि इसका तड़का असर इसके बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर काफी प्रभाव पड़ेगा।

वया है कहानी

फिल्म मुंबई सागा की कहानी अमरत्वा राव(जॉन अब्राहम) की कहानी है जिसने मुंबई पर राज करने का सपना देखा था। अमरत्वा राव, छोटा राजन का सहयोगी हुआ करता था। छोटा राजन के कहने पर अमरत्वा राव ने कई बिजनेसमें को मौत की नींद सुलाया था। अमरत्वा, छोटा राजन की हर एक बात माना करता था। छोटा राजन के इशारों पर एक के बाद एक कई खून करने के बाद वह कुछ समय में ही छोटा राजन का राइट हैंड बन गया था। वहीं उसके हर कदम पर इस्पेक्टर विजय सावरकर(इमरान हाशमी) नजर रखता था। सावरकर राव के हर कदम को पहचानकर उसे पकड़ने की कोशिश करता है। अब राव पुलिस की पकड़ में आता है या नहीं ये तो आपको फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा।

रिक्वू

अगर आप संजय गुप्ता के डायरेक्शन में बनी फिल्म को ध्यान से देखेंगे तो आपको समझ आया मुंबई सागा में कुछ खास नवाने नार्थ था। उनकी पुरानी फिल्मों की तरह पुलिस और चोर के बीच विल्ली और चूहे का खेल नजर आ रहा है। विजय का किरदार इमरान हाशमी ने निभाया है और अमरत्वा का किरदार जॉन अब्राहम ने। जॉन को गैमस्टर बनाने में डायरेक्टर ने फर्स्ट हाफ लगा दिया और कैसे उसे पुलिस पकड़ना चाहती है। अर्जुन को गुंडों के बहुत घुरी तरह से मारने के बाद अमरत्वा माफिया बनने की ठान लेता है। एक्शन से भरपूर फिल्म में बहुत भारी-भरकर डायलॉग्स का इस्तेमाल किया गया है। जैसे कि- बंदूक से निकली गोली ना ईद देखती है ना गोली या मराठी को जो रोकना, मराठी उसे टोकना।



मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने वर्षा और ओलावृष्टि के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए।

क्षति का आंकलन कर दी जाए सहायता : मुख्यमंत्री श्री चौहान

सरकार किसानों के साथ खड़ी है, मुख्यमंत्री निवास पर हुई बैठक

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश में हुई बे-मौसम वर्षा के संबंध में आज प्रातः निवास में बैठक में अधिकारियों से विस्तार से जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि सरकार किसानों के साथ खड़ी है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रभावित जिलों में क्षति के आकलन कार्य को तत्काल प्रारंभ किया जाए। बे-मौसम हुई बारिश से फसलों को हुई क्षति का सर्वे कार्य पूरी ईमानदारी से किया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को सर्वे के बाद आवश्यक सहायता प्रदान की जाएगी। बैठक में मुख्य सचिव

इकबाल सिंह बैस, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री के. के. सिंह, प्रमुख सचिव कृषि अजीत केसरी और मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव मनीष रस्तोगी उपस्थित थे।

पंचायत में चर्चा हो रिपोर्ट-मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि सर्वे की रिपोर्ट पंचायत कार्यलय में चर्चा की जाए, जिससे सर्वे में प्राप्त फसलों की क्षति की जानकारी संबंधित किसान को भी प्राप्त हो सके।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों को नियमानुसार फसल बीमा योजना का लाभ भी दिलवाने का कार्य है।

जन हानि, पशु हानि पर प्रावधान के अनुसार मदद की जाए-मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि फसलों की हानि के साथ ही जनहानि और पशु हानि के प्रकरणों में भी सहायता दी जाए। जहाँ जन हानि हुई है, प्रावधान अनुसार चार-चार लाख की राशि प्रभावित परिवारों को दी जाए। कृषि विभाग और राजस्व विभाग संयुक्त निरीक्षण करें। राजस्व पुस्तक परिपत्र 6-4 के प्रावधान के अनुसार पात्र प्रभावितों की पूरी मदद की जाए। बैठक में बताया गया कि प्रदेश में करीब 15 से 20 जिलों में

असमय वर्षा हुई है। कहीं-कहीं ओलावृष्टि भी हुई है। अभी क्षति का आकलन किया जा रहा है। शीघ्र ही जिलों से प्रतिवेदन प्राप्त होगा। शुक्रवार की शाम जिलों में बारिश की जानकारी प्राप्त हुई है। पश्चिम मध्यप्रदेश के दो-तीन जिलों में और चंबल क्षेत्र में भी वर्षा हुई है। फसलों की क्षति अधिक नहीं हुई है। यहाँ आंशिक प्रभाव है, उसका आकलन किया जा रहा है। सात लोगों की आकाशीय बिजली गिरने से मृत्यु की सूचनाएँ मिली हैं। कहीं-कहीं पशु हानि भी रिकार्ड की गई है।

आत्म-निर्भर मग्न में महिलाओं की होगी सशक्त भागीदारी : मुख्यमंत्री

रायसेन। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के रोडमैप में महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता में लिया गया है, जिससे प्रदेश की महिलाएँ अपने हठ से आत्म-निर्भर बनेंगी और मध्यप्रदेश को आत्म-निर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिये राज्य सरकार उन्हें हर संभव मदद कर रही है। महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, महिला-कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक उन्नति, रोजगार, समानता, बेटी-बचाओ और महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रभावी कार्य किये जा रहे हैं। महिलाओं और बच्चियों के लिये अनेक योजनाएँ भी संचालित की जा रही हैं, इन योजनाओं का लाभ उन्हें उनके हक के आधार पर दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ऐसा कोई काम नहीं है, जो महिलाएँ नहीं कर सकती। मध्यप्रदेश में महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के गम्भीर प्रयास किये जा रहे हैं, जिससे महिलाओं की सशक्त भागीदारी प्रदेश के विकास में सुनिश्चित की जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि महिला स्व-सहायता समूहों को आर्थिक संबल देने का कार्य निरंतर किया जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रदेश के

महिला स्व-सहायता समूहों के खातों में 200 करोड़ रुपये अंतरित किये गये हैं। अब प्रत्येक माह समूहों के खाते में 150 करोड़ रुपये डाले जाएंगे। महिला स्व-सहायता समूहों को अब 4 प्रतिशत दर की जगह 2 प्रतिशत पर ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। शेष ब्याज की राशि सरकार देगी। महिला स्व-सहायता समूहों को इस बार गेहूँ और अन्य फसलों की खरीदी से भी जोड़ा जा रहा है। साथ ही मध्याह्न भोजन में प्रयुक्त सामग्री भी महिला स्व-सहायता समूह से क्रय की जाएगी। पंचायत स्तर पर होने वाले सर्वेक्षणों, मंत्रणा के तहत 50 प्रतिशत मेट महिला स्व-सहायता समूह की उच्च शिक्षा की फीस सरकार वहन करेगी। प्रदेश में शीघ्र ही नारी सम्मान कोष भी स्थापित किया जाएगा। प्रदेश में महिलाओं के लिये संचालित प्रदेश में महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से लोकल को वोकल बनाया जा रहा है। घर-परिवार में महिलाओं का वजूद बनाने के लिये राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि जमीन में पत्नी के साथ पत्नी का नाम जोड़ना जरूरी होगा। नई सम्पत्ति बहन, माँ, बेटी, पत्नी के नाम पर खरीदने पर रजिस्ट्रेशन में दो प्रतिशत की छूट

का प्रावधान भी किया। आवास योजनाओं में पति-पत्नी दोनों का संयुक्त नाम होगा। पुरुष प्रधान मानसिकता को बदलने के लिये उमंग कार्यक्रम लागू किया जा रहा है। इसमें कक्षा 9वीं से 11वीं के बच्चों को लड़कियों को इज्जत देने के संस्कार दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि प्रदेश में बच्चियों के प्रति अपनत्व जगाने के लिये शुरू की गई लाइली लक्ष्मी योजना में आज 38 लाख से अधिक प्रदेश की बेटियाँ लाइली लक्ष्मी हैं। इन लाइली लक्ष्मियों की शिक्षा की जिम्मेदारी भी सरकार उठा रही है। आई.आई.टी., आई.आई.एम, डॉक्टरी, इंजीनियरिंग सहित देश-विदेश में इनकी उच्च शिक्षा की फीस सरकार वहन करेगी। प्रदेश में शीघ्र ही नारी सम्मान कोष भी स्थापित किया जाएगा। प्रदेश में महिलाओं के लिये संचालित प्रदेश में महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से लोकल को वोकल बनाया जा रहा है। घर-परिवार में महिलाओं का वजूद बनाने के लिये राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि जमीन में पत्नी के साथ पत्नी का नाम जोड़ना जरूरी होगा। नई सम्पत्ति बहन, माँ, बेटी, पत्नी के नाम पर खरीदने पर रजिस्ट्रेशन में दो प्रतिशत की छूट

प्रतिशत उपलब्धि अर्जित करने पर मध्यप्रदेश को राष्ट्रीय स्तर प्रथम स्थान दिये जाने की घोषणा की गई है। योजना अन्तर्गत समस्त गर्भवती महिलाओं और धारी माताओं को प्रथम जीवित जन्मे बच्चे पर निर्धारित शर्तों की पूर्ति उपरान्त प्रति हिताग्रीही 5 हजार रुपये तीन किस्तों में दिये जाने का प्रावधान है। बेटियों और महिलाओं के प्रति राज्य सरकार पूर्ण संवेदनशील है। प्रदेश में धर्म स्वातंत्र्य विधेयक विधानसभा से पारित हो गया है। अधिनियम के तहत ऐसे अपराधी जो डरा, धमकाकर, बहला-फुसलाकर बेटियों को बगलालते हैं, उन्हें आजीवन कारावास की कड़ी सजा दिलाई जाएगी। प्रदेश की गुम हुई बेटियों का पता लगाने के लिये 'मुस्कान अभियान' प्रारंभ किया गया है। इस अभियान में 9 हजार लापता बेटियों को ढूँढ कर उनके अभिभावकों को सौंपा गया है। मध्यप्रदेश देश का पहला ऐसा राज्य है जिसने न केवल दुराचार करने वाले अपराधियों को फाँसी की सजा का प्रावधान किया बल्कि अब तक 72 अपराधियों को फाँसी की सजा भी दिलवाई जा चुकी है। बेटियों की आत्म-रक्षा के लिए अपराजित कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया है। इसमें पहले चरण में प्रदेश की 23 हजार छात्राओं को मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग दी जाएगी।

ऑटिज्म पीड़ित बच्चों के माता-पिता 24x7 हेल्प लाइन पर कर सकते हैं बात

रायसेन। सामाजिक न्याय एवं निःशुल्क कल्याण मंत्री श्री प्रेमसिंह पटेल ने दिव्यांगजनों से उनकी विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिये शासन द्वारा संचालित टोल फ्री हेल्प लाइन नम्बरों का प्रयोग करने की अपील की है। श्री पटेल ने कहा कि ऑटिज्म (स्वतन्त्रता) विकार के लक्षणों को समझने और पहचानने के लिये माता-पिता अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की टोल फ्री हेल्प लाइन 1800-11-7776 पर 24 घंटे में कभी भी फोन कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पुर्वास से संबंधित मामलों पर कॉन्सलिंग के लिये टोल फ्री हेल्प लाइन नम्बर 1800-599-0019 भी दिन-रात कार्यरत है। प्रमुख सचिव सामाजिक

न्याय एवं निःशुल्क कल्याण श्री प्रतीक इजेला ने बताया कि ऑटिज्म एक मानसिक बीमारी है, जो एक से 5 वर्षीय बच्चों में देखने में आती है। बच्चे देखने में नार्मल लगते हैं, लेकिन अपने में लीन रहते हैं। यदि बच्चा ठीक से बोल नहीं पाता, पृष्ठ पर जवाब नहीं दे पाता, नये लोगों से मिलने

दिल्ली की हेल्प लाइन पर संपर्क करें। इसी तरह दिव्यांगजनों के लिये मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों, विशेष शिक्षा, ऑन्यूपेशनल थेरेपी, वोकेशनल कॉन्सलिंग, स्वीच थेरेपी और बौद्धिक दिव्यांगजनों की फिजियोथेरेपी से संबंधित जानकारी के लिये राष्ट्रीय बौद्धिक दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान के टोल फ्री हेल्प लाइन नंबर 1800-572-6422 पर सोमवार से शुक्रवार, सुबह 9 बजे से शाम 5-30 बजे तक संपर्क कर सकते हैं। भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण विभाग ने दिव्यांगजनों के लिये सहायक उपकरणों के बारे में जानकारी

प्रदान करने और इन उपकरणों को ठीक करने के लिये हेल्प लाइन नम्बर 1800-180-5129 शुरू की है। इस टोल फ्री नम्बर पर भी सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक संपर्क किया जा सकता है। राष्ट्रीय दिव्यांगजन वित्त विकास निगम दिव्यांगजनों के लिये सस्ती दरों पर ऋण सुविधा और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करता है। ऋण योजना, कौशल प्रशिक्षण, दिव्यांगजन स्वावलंबन योजना, विशेष माइक्रोफाइनेंस योजना के संबंध में जानकारी और दिशा-निर्देश के लिये एनएचएफडीसी के टोल फ्री हेल्प लाइन नम्बर 1800-11-4515 पर सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9-30 से शाम 5-30 के मध्य संपर्क कर सकते हैं।

ऊर्जा विभाग में एक वर्ष में हुए उल्लेखनीय कार्य: ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

भोपाल। प्रदेश में उपलब्ध विद्युत क्षमता में इस वर्ष 909 मेगावाट की वृद्धि हुई है। आगामी वित्तीय वर्ष में विद्युत उपलब्ध क्षमता में 1426 मेगावाट वृद्धि की योजना है। गत 31 दिसम्बर, 2020 में अभी तक की सर्वाधिक 15 हजार 425 मेगावाट माँग की पूर्ति की गयी। प्रदेश में पारेषण हानियाँ अब मात्र 2.59 प्रतिशत रह गयी हैं। यह पूरे देश में न्यूनतम हानियों में एक है। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लॉकडाउन अवधि में बिजली उपभोक्ताओं की तकलीफ को महसूस कर उनके हित में अनेक निर्णय लिये हैं। इन निर्णयों से उपभोक्ताओं को 1000 करोड़ से अधिक की राहत मिल चुकी है। ट्रांसफार्मर, मीटर, केबल और कंडक्टर जैसी मुख्य सामग्री के परीक्षण के लिये भोपाल, इंदौर और जबलपुर में प्रयोगशालाएँ बनायी गयी हैं। परीक्षण के आधार पर डिफाल्टर कम्पनियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा रही है। आउटसोर्स

कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलवाया जा रहा है। स्थानीय निर्माताओं से होगी सामग्री खरीदी-प्रदेश के स्थानीय निर्माताओं को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से निर्णय लिया गया है कि भविष्य में कुल सामग्री खरीदी में न्यूनतम 10 प्रतिशत राशि की सामग्री इनसे खरीदी जायेगी। उपभोक्ताओं से फीडबैक-ऊर्जा मंत्री से

जनवरी-2021 तक प्राप्त सभी 26 लाख 33 हजार 856 शिकायतों को निराकृत कर दिया गया है। उपभोक्ताओं के गलत देयकों से संबंधित शिकायतों के निराकरण के लिये 7 हजार 197 शिविर लगाये गये। इन्में 51 हजार 267 शिकायतों का निराकरण मौके पर ही किया गया। विद्युत आपूर्ति की नियमित समीक्षा कर कृषि

विकास विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की समीक्षा की गई। इसमें प्रदेश के सफल क्रियान्वयन और 152

प्रदेश में पारेषण हानियाँ अब मात्र 2.59 प्रतिशत

लेकर जूनियर इंजीनियर तक बिजली उपभोक्ताओं से चर्चा कर विभाग की कार्य-प्रणाली का फीडबैक ले रहे हैं। इस नवाचार में 3 माह में 4 लाख से अधिक उपभोक्ताओं से संवाद किया गया। इसमें संतुष्टि का प्रतिशत ट्रांसफार्मर, मीटर, केबल और कंडक्टर जैसी मुख्य सामग्री के परीक्षण के लिये भोपाल, इंदौर और जबलपुर में प्रयोगशालाएँ बनायी गयी हैं। परीक्षण के आधार पर डिफाल्टर कम्पनियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा रही है। आउटसोर्स

उपभोक्ताओं को 10 घंटे और गैर कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे विद्युत आपूर्ति की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में जनवरी-2021 तक की अवधि में ट्रांसफार्मर फेल होने की दर 8.9 प्रतिशत रही, जबकि गत वर्ष यह 9.6 प्रतिशत दर प्रति 3 माह में मीटर-रीडर की अदला-बदली की व्यवस्था की गई है।

प्रदेश में ग्रीन इंडिया मिशन में हुए कार्यों को विश्व बैंक ने सराहा : वन मंत्री डॉ. शाह

भोपाल। प्रदेश में वनों के सुधार से कार्बन संचयन और जलागम क्षेत्रों का संरक्षण कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, प्रशिक्षण-कौशल विकास के जरिए स्थानीय समुदाय की आजीविका को सुदृढ़ करने में ग्रीन इण्डिया मिशन योजना को विश्व बैंक द्वारा सराहा गया है।

ग्रीन इंडिया मिशन योजना-प्रदेश स्तर पर वन विभाग में गठित परियोजना क्रियान्वयन ईकाई द्वारा जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर 5 वर्षीय दीर्घकालीन योजना तैयार की गई है। प्रदेश के वनों को 8 विभिन्न लैण्ड स्केप परियोजनाओं में 18 हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र को अग्नि के प्रभाव से मुक्त रखने में कामयाबी हासिल की गई है।

अति संवेदनशील वन मण्डल क्षेत्र-प्रदेश के सतना, बालाघाट (दक्षिण बालाघाट), बैतूल (पश्चिम बैतूल), धार, झाबुआ, बड़वानी, बडवानी (संघवा), पन्ना (दक्षिण पन्ना), श्योपुर, उमरिया, होशंगाबाद,

पौधारोपण का उपचारित कराया गया। विश्व बैंक द्वारा शत-प्रतिशत अनुदान प्राप्त योजना इकोसिस्टम सर्विसेज इम्पूवमेंट परियोजना में 5367 हिताग्रीहियों को पहचान की जाकर 3203 हिताग्रीहियों को प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन द्वारा रोजगार के साधन के विकास आदि कार्य कराए गए हैं। वन मंत्री ने बताया कि विश्व बैंक द्वारा स्टाफ वेप आधारित प्लानिंग मॉनीटरिंग सिस्टम में अग्रणी मान्य किया गया है और महुआ संग्रहण के क्षेत्र में महुआ नेट के उपयोग से होशंगाबाद और बैतूल में उत्तर बैतूल वन मण्डल के लैण्डस्केप के आदिवासियों द्वारा अपनी आय में बढ़ोत्तरी करने के साथ ही 18 हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र को अग्नि के प्रभाव से मुक्त रखने में कामयाबी हासिल की गई है।

सिवनी (दक्षिण सिवनी), बैतूल (उत्तर बैतूल), रायसेन, औदुलागंज, सोहोर और सागर जिले के दक्षिण सागर वन मण्डल को अति संवेदनशील लैण्ड स्केप के रूप में चर्चित किया गया है। वन मंत्री कुंवर शाह ने बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा इस वित्तीय वर्ष में 26 करोड़ 22 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है।

विश्व वानिकी दिवस 21 मार्च

रायसेन। वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि विश्व भर में हरे आवरण की लगातार कमी होने से पर्यावरण के बिगड़ गए संतुलन को बनाए रखने के लिए वनों का संरक्षण और विकास ही एक विकल्प हो सकता है। डॉ. कुंवर शाह ने विश्व वानिकी दिवस को प्रदेश में हरियाली बढ़ाने की दिशा में चिन्तन करने का आह्वान किया है उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष में 5 करोड़ पौधों का रोपण का कार्य कराने से वनीकरण योजनाओं के अच्छे परिणाम परिलक्षित हुए हैं।

पर्यावरण के बिगड़े संतुलन को वनों के संरक्षण और विकास ही विकल्प होगा वन: मंत्री कुंवर शाह

भोपाल। वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि विश्व भर में हरे आवरण की लगातार कमी होने से पर्यावरण के बिगड़ गए संतुलन को बनाए रखने के लिए वनों का संरक्षण और विकास ही एक विकल्प हो सकता है। डॉ. कुंवर शाह ने विश्व वानिकी दिवस को प्रदेश में हरियाली बढ़ाने की दिशा में चिन्तन करने का आह्वान किया है उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष में 5 करोड़ पौधों का रोपण का कार्य कराने से वनीकरण योजनाओं के अच्छे परिणाम परिलक्षित हुए हैं। उन्होंने कहा है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में वन विभाग वनों की सुरक्षा और विकास के साथ वनों पर आश्रित जनवासियों के कल्याण पर गंभीरता से कार्य कर रहा है।

अति संवेदनशील वन मण्डल क्षेत्र-प्रदेश के सतना, बालाघाट (दक्षिण बालाघाट), बैतूल (पश्चिम बैतूल), धार, झाबुआ, बड़वानी, बडवानी (संघवा), पन्ना (दक्षिण पन्ना), श्योपुर, उमरिया, होशंगाबाद,

अनिवार्य उपयोग के साथ ही निर्धारित गाइडलाइन का पालन कर सहेयों करें। प्रदेश में वैकसीनेशन कार्य भी चल रहा है। राज्य सरकार अधिक त्रि-आयामी प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए नागरिक पूरी सावधानियाँ बरतें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि त्रि-आयामी प्रयासों के अंतर्गत सबसे पहले कोरोना से बचाव के लिए प्रचार-प्रसार और जागरूकता अभियान पर जोर दिया गया है। इसके बाद जिन जिलों में अधिक संक्रमण हो रहा है, उन जिलों में वैकसीनेशन कार्य को प्राथमिकता

कोरोना के बचाव के लिए त्रि-आयामी प्रयास: मुख्यमंत्री श्री चौहान

रायसेन। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में कोरोना से बचाव और उपचार व्यवस्था के संबंध में राज्य सरकार त्रि-आयामी प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए नागरिक पूरी सावधानियाँ बरतें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि त्रि-आयामी प्रयासों के अंतर्गत सबसे पहले कोरोना से बचाव के लिए प्रचार-प्रसार और जागरूकता अभियान पर जोर दिया गया है। इसके बाद जिन जिलों में अधिक संक्रमण हो रहा है, उन जिलों में वैकसीनेशन कार्य को प्राथमिकता

अनिवार्य उपयोग के साथ ही निर्धारित गाइडलाइन का पालन कर सहेयों करें। प्रदेश में वैकसीनेशन कार्य भी चल रहा है। राज्य सरकार अधिक त्रि-आयामी प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए नागरिक पूरी सावधानियाँ बरतें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि त्रि-आयामी प्रयासों के अंतर्गत सबसे पहले कोरोना से बचाव के लिए प्रचार-प्रसार और जागरूकता अभियान पर जोर दिया गया है। इसके बाद जिन जिलों में अधिक संक्रमण हो रहा है, उन जिलों में वैकसीनेशन कार्य को प्राथमिकता

अनिवार्य उपयोग के साथ ही निर्धारित गाइडलाइन का पालन कर सहेयों करें। प्रदेश में वैकसीनेशन कार्य भी चल रहा है। राज्य सरकार अधिक त्रि-आयामी प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए नागरिक पूरी सावधानियाँ बरतें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि त्रि-आयामी प्रयासों के अंतर्गत सबसे पहले कोरोना से बचाव के लिए प्रचार-प्रसार और जागरूकता अभियान पर जोर दिया गया है। इसके बाद जिन जिलों में अधिक संक्रमण हो रहा है, उन जिलों में वैकसीनेशन कार्य को प्राथमिकता



मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने स्मार्ट पार्क में पौध-रोपण किया। सांसद श्री सिधिया और मंत्री परिषद के सदस्य भी मौजूद रहे।...

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सांसद श्री सिधिया के साथ लगाए पौधे

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिधिया के साथ भोपाल के स्मार्ट उद्यान में पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान और सांसद श्री सिधिया ने पत्रिका समाचार-पत्र समूह के संस्थापक, समाजसेवी प्रख्यात लेखक श्री कर्पूर चंद्र कुलिश की स्मृति में पारिजात का पौधा रोपा। इस अवसर पर अनेक जन-प्रतिनिधि उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज यहाँ पारिजात का पौधा स्व. कुलिश जी की स्मृति में रोपा है। स्व. कुलिश प्रसिद्ध साहित्यकार और समाज सेवा क्षेत्र में अतृट कार्य के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 7 मार्च 1956 को पत्रिका समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था। इस अवसर पर सांसद श्री

ज्योतिरादित्य सिधिया ने भी पौध-रोपण किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज लगाए गए चांदनी और चमेली के पौधे विकास और आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश का प्रतीक हैं। मध्यप्रदेश प्राणी पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। सांसद श्री सिधिया ने कहा कि वृक्षारोपण सिर्फ पौधे लगाना नहीं बल्कि चहुँमुखी विकास का संकल्प भी है।

चांदनी और चमेली के पौधे भी लगाए-विक्रित्सा शास्त्रियों के अनुसार पारिजात का पौधा एक उत्तम औषधि है। इसका उपयोग कई रोगों को ठीक करने में होता है। मुख्य रूप से पारिजात, पाचन-तंत्र, पेट के कीड़े की बीमारी, बुखार, लीवर विकार सहित अन्य कई रोगों के उपचार में उपयोगी होता है।

आज होगी टी-20 की आखिरी जंग, विराट के पास मैच विनर प्लेयर्स की फौज

भारत बनाम इंग्लैंड के बीच पांचवां और आखिरी टी-20 मैच शनिवार को अहमदाबाद के नोटेड मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। यह मुकाबला काफी बड़ा है क्योंकि एक जीत-हार सीरीज का परिणाम बदल देगी। ऐसे में विराट कोहली एंड टीम पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरेगी।



पांड्या ने भी मदद की इस सीरीज में भारत के लिए एक और बड़ा प्लेयर हार्दिक पांड्या का नियमित रूप से मैच के साथ योगदान रहा है। वह गुरुवार को स्टाट गेंदबाजी में शामिल थे, उन्होंने बार ओवरों में 16 रन देकर दो विकेट लिए। युजवेंद्र चहल की जगह लेगी राहुल वाहर ने भी अच्छे प्रदर्शन किया, केएल राहुल की फॉर्म जोड़ा विला का विषय है मगर वह खिलाड़ी जल्द लय में लौट आएगा, इसकी सभी उम्मीद कर रहे हैं।

अहमदाबाद ■ एजेसी
इंग्लैंड को कड़ी टक्कर देने के बाद टीम इंडिया आत्मविश्वास से भरपूर है। शनिवार को सीरीज डिवाइडिंग मैच खेला जाएगा। इस मुकाबले के लिए टीम इंडिया काफी मेहनत कर रही है। इस सीरीज में जीत भारत के टी-20 वर्ल्डकप की तैयारियों को नई राह देगी। भारत, जो सबसे छोटे फॉर्मेट में एक नए और निडर दृष्टिकोण के साथ सीरीज में आया है। वे खुद को इस साल के अंत में होने वाले मेगा इवेंट के लिए खुद को अच्छी स्थिति में देख रहे हैं। विराट कोहली की अगुवाई वाली टीम, जिसके पास सभी परिस्थितियों में आक्रमण करने की गहराई नहीं थी मगर इशान किशन और सूर्यकुमार यादव के आने से टीम की बल्लेबाजी मजबूत हुई है।

भारत की ये है मजबूती
टोपि किरी को हेरानी नहीं है। टीम सलेक्शन से पहले तुषानी घारी खेलकर यादव ने भारत की बैटिंग को और मजबूत कर दिया है। चौथे मैच में सूर्यकुमार की घारी से कप्तान विराट कोहली भी प्रभावित हुए हैं। कोहली ने कहा, पहले मैच में तीन पर बैटिंग करना आसान नहीं होता। मगर सूर्यकुमार ने जैसी शुरुआत की हम सभी दंग रह गए। उन्होंने अपने अधिकार पर मुहर लगा दी और ब्रेक, हार्दिक और पत को अपना काम करने दिया। मैं इन युवाओं का प्रशंसक हूँ। किशन और सूर्यकुमार ने मिले मौकों का पूरी तरह से फायदा उठाया है। अब सिर्फ हरियाणा के हरफनमौला खिलाड़ी राहुल तेलविया वगैरे हैं जिन्हें एलेक्स डेवेलन में मौका नहीं मिला। शनिवार को आखिरी टी-20 में तेलविया टीम इंडिया में हो सकते हैं।

इंग्लैंड के लिए क्या हैं चुनौती
दूसरी ओर, इंग्लैंड को जोस बटलर और दुनिया के नंबर एक बल्लेबाज डेविड मलान से उम्मीद होगी कि वह बल्ले से अधिक निरंतरता दिखाएंगे। जोश आर्चर और मार्क वुड को पस जोड़ी प्रभावशाली रही है, लेकिन उन्हें क्रिस जॉर्डन से ज्यादा समर्थन नहीं मिला है, जिन्होंने चौथे टी 20 में ज्यादा रन सट्टाए। चौथे टी-20 में आठ रन से हार के बाद मार्गन ने कहा था, हम इस सीरीज में जितना हो सके उतना सीखने को कोशिश कर रहे हैं। स्टाट गेंदबाजी में विश्व कप की प्रगति महत्वपूर्ण है।

टीम इंडिया
विराट कोहली (कप्तान), रोहित शर्मा (वीसी), केएल राहुल, शिखर धवन, ब्रेक अख्यर, सूर्यकुमार यादव, ज्ञान पंत (इस्युट), हार्दिक पांड्या, युजवेंद्र चहल, भुवनेश्वर कुमार, अक्षर पटेल, वॉशिंगटन सुंदर, शार्दूल ठाकुर, नवदीप सेनी, दीपक चाहर, राहुल तेलविया, इशान किशन।
टीम इंग्लैंड
इयोन मॉर्गन (कप्तान), जोस बटलर, जेसन रॉय, शियाम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, वेन स्टोक्स, मोइन अली, आदिब राशिद, रिस टॉपले, क्रिस जॉर्डन, मार्क वुड, सेम करन, टॉम करन, सेम विलियंस, जॉनी बेयरस्टो, जोका अवरॉन।

वनडे सीरीज के लिए टीम इंडिया का ऐलान: ऑलराउंडर क्रुणाल पंड्या की वापसी | सूर्यकुमार और प्रसिद्ध कृष्णा को पहली बार भारतीय टीम में मौका

सूर्यकुमार और प्रसिद्ध कृष्णा को पहली बार भारतीय टीम में मौका

नई दिल्ली ■ एजेसी
इंग्लैंड के खिलाफ 3 वनडे मैचों की सीरीज के लिए शुरुआत को टीम इंडिया का ऐलान कर दिया गया। इंग्लैंड के खिलाफ अभी जारी टी-20 सीरीज से इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू करने वाले सूर्यकुमार यादव को पहली बार वनडे टीम में शामिल किया गया है। साथ ही 140 किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले प्रसिद्ध कृष्णा को भी मौका दिया गया है। कृष्णा पहली बार भारतीय टीम का हिस्सा बने हैं। दूसरी ओर, इशान किशन और पुष्पेश शर्मा जैसे युवा खिलाड़ी जगह बनाने में सफल नहीं हो सके। इशान ने दूसरे टी-20 मैच में तुषानी अर्धशतक के साथ अपने इंटरनेशनल करियर का आगाज किया था। वहीं, सुबई के पुष्पेश शर्मा ने घरेलू वनडे टूर्नामेंट विजय हजारे ट्रॉफी में 8 मैचों में 165 की औसत से 827 रन बनाए थे। इसी टूर्नामेंट में 7 मैचों में 737 रन बनाने वाले कर्नाटक के देवदत्त पंडिकल को भी टीम में शामिल नहीं किया गया है। भारत और इंग्लैंड के बीच वनडे सीरीज 23 मार्च से पुणे में खेली जानी है।



सपना सच होने जैसा है: कृष्णा
पहली बार भारतीय क्रिकेट टीम में चुने गए तेज गेंदबाज एम प्रसिद्ध कृष्णा ने कहा है कि उनके लिए यह सपना सच होने जैसा है। कृष्णा, बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव और आल राउण्डर पंड्या को पहली बार भारतीय वनडे टीम में शामिल किया गया है। इन तीनों को इंग्लैंड के साथ होने वाली तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए भारतीय टीम में चुना गया है। कृष्णा ने ट्वीटर पर कहा, जब आप अपने देश के लिए खेलने के लिए चुने जाते तो वह सपना लगता है। यह एक सपने के सच होने जैसा है। मैं अपनी भूमिका निभाने और टीम की सफलता में योगदान देने को लेकर उत्साहित हूँ। वीसीसीआई का धन्यवाद। शुरू करने के लिए अब और इंतजार नहीं कर सकते। 25 साल के कृष्णा घरेलू क्रिकेट में कर्नाटक के लिए खेलते हैं। उन्होंने हाल ही में किजय चकार ट्रॉफी और मुम्बई का अली ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन किया था। कृष्णा आइपीएल में कोल्काता नाइट राइडर्स के लिए खेलते हैं। भारत को इंग्लैंड के साथ 23 से 28 मार्च तक तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलनी है। सीरीज के तीनों मैच अहमदाबाद के मोटेरा स्टेडियम में खेले जाएंगे। दोनो टीमों के खिलाफ इसी स्टेडियम में पांच मैचों की टी20 सीरीज खेल रही है।

चड़्दा के ऑलराउंडर क्रुणाल टी-20 में भारत के लिए खेल चुके हैं। उन्हें टीम इंडिया में शामिल किया गया है। क्रुणाल ने विजय हजारे ट्रॉफी में 2 नाबाद सेंचुरी और दो हाफ सेंचुरी लगाई थी। कर्नाटक के प्रसिद्ध कृष्णा ने विजय हजारे ट्रॉफी में 14 विकेट लिए थे। पिछले कुछ समय से वह भारतीय डोमेस्टिक सर्किट में बेहतरीन प्रदर्शन से से एक रहे हैं।

उनकी खासियत है कि वे 145 प्लस की रफ्तार से गेंद फेंक सकते हैं। क्लब में वे कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए खेलते हैं। तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की वनडे सीरीज में 17 महीने बाद वापसी हुई है। भुवनेश्वर फिलहाल टी-20 सीरीज का हिस्सा हैं। उन्होंने अपना आखिरी वनडे मुकाबला अगस्त 2019 में वेस्टइंडीज के खिलाफ क्वींस ओवल में खेला था। घरेलू सीजन में शानदार प्रदर्शन करने वाले पुष्पेश शर्मा और देवदत्त पंडिकल को टीम में शामिल नहीं किया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि टीम में पहले से ही ओपनर्स की जगह फुल है। टीम में लोकेश राहुल, शिखर धवन, शुभमन गिल और रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ी मौजूद हैं। लिहाजा, शर्मा और पंडिकल को अभी इंतजार करना होगा। शर्मा को ऑस्ट्रेलिया दौर पर पहले टेस्ट में मौका दिया गया था। लेकिन, वे दोनों पारियों में फेल रहे और तब से उन्हें फिर मौका नहीं मिला।

सूर्यकुमार को पहली टी-20 पारी में फिफ्टी जमाने का इनाम



सूर्यकुमार ने इंग्लैंड के खिलाफ अपनी पहली टी-20 पारी में फिफ्टी लगाकर सभी को प्रभावित किया। उन्होंने 31 गेंदों पर शानदार 57 रन बनाए। उनकी घारी की बदौलत भारत ने इंग्लैंड को चौथे टी-20 में 8 रनों से हराया और 5 मैच की सीरीज में 2-2 की बराबरी की। उन्हें मैन ऑफ द मैच भी चुना गया। सूर्यकुमार ने सीरीज के दूसरे मैच में ही डेब्यू किया था लेकिन तब उन्हें वल्लेबाजी का मौका नहीं मिला था। तीसरे मैच में वे प्लेसिंग-11 से बाहर रहे थे। करियर की पहली पारी उन्होंने सीरीज के चौथे टी-20 मैच में खेली।

जडेजा-बुमराह को आराम

उंगली में प्रैक्जर के बाद प्रैक्टेस शुरू करने वाले रविंद्र जडेजा को आराम दिया गया है। उन्हें अभी अपनी फिटनेस साबित करनी है। वहीं, हाल ही में शरीर के बंधन के बंधने वाले तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह भी इस टीम का हिस्सा नहीं हैं।

लड़कियों की जूनियर एवं कैडेट कुश्ती चैंपियनशिप का आगाज



पोम्बा के गोल से मैनचेस्टर यूनाइटेड को मिली जीत

मिलान। सफ्टवेयर खिलाड़ी पॉल पोम्बा के एकमात्र गोल से मैनचेस्टर यूनाइटेड ने यूरोपा लीग के मुकाबले में एसी मिलान को 1-0 से हरा दिया। डीपीए की रिपोर्ट के अनुसार, चोटिल के बाद वापस लौटे मिडफील्डर पोम्बा ने मैच में एकमात्र गोल किया और एसी मिलान के खिलाफ अपनी टीम को जीत दिलाई। इससे पहले, मैनचेस्टर यूनाइटेड और एसी मिलान के बीच पहले हाफ तक मुकाबला गोल रहित रहा और दोनों टीमों में गोल नहीं कर सके। दूसरे हाफ की शुरुआत में मैनचेस्टर यूनाइटेड की ओर से पोम्बा ने 48वें मिनट में गोल कर टीम को बढ़त दिला दी। इसके बाद एसी मिलान ने भी बराबरी हासिल करने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हो सके। निर्धारित समय तक एसी मिलान कोई गोल नहीं कर सका और उसे मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। इस बीच एक अन्य मुकाबले में असेनाल को ओलंपिआकोस के हाथों 0-1 से पराजय का सामना करना पड़ा।

कभी अपना भारतीय पासपोर्ट वापस करने के बारे में नहीं सोचा : इशान पंडिता

नई दिल्ली ■ एजेसी
स्ट्राइकर इशान पंडिता ने इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) में अपने पहले सीजन में एफसी गोवा के लिए चार गोल किए थे और वह पूरे सीजन में सिर्फ 131 मिनट ही मैदान पर खेले थे। दिल्ली में पैदा हुए इशान फिलीपींस में पले-वर्दे और फिर स्पेन में उन्होंने अपनी फुटबॉल की शिक्षा ली। 22 साल के स्ट्राइकर ने भारतीय राष्ट्रीय फुटबॉल टीम में चुने और स्पेन से भारत तक के सफर के बारे में विस्तार से बात की। इशान ने कहा, यह एक अद्भुत अनुभव था। खेल के लिए मेरे पास जो भूख और जुनून है वह मेरे लिए इसे परिभाषित करता है। मेरे अंतर वेतन प्रदर्शन करने की भूख थी और मैंने नेट के पीछे गेंद को देखने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। मैं एक सफ्टवेयर के रूप में मैदान पर उतर रहा था और अपनी छाप छोड़ने के लिए मेरे पास बहुत ही कम समय होता था। मेरी हाताश कोई सोचा नहीं जानता था। दिल्ली में पैदा होने वाले इशान बाद में विदेश में रिफ्ट हो गए थे। उन्होंने कहा, मैं दिल्ली में पैदा हुआ था और मेरी जड़ें कश्मीर में लौट आईं। जब मैं तीन साल का था तब मेरा परिवार फिलीपींस चला गया और मैंने वहाँ नौ साल तक रहकर पढ़ाई की। हम बेंगलूर वापस चले गए और मैं 10 वीं कक्षा तक वहीं रहा। जब मैं केवल 16 साल का था तब अपने सपने को पूरा करने के लिए स्पेन चला गया। उन्होंने कहा, मैं अकेले गया। शुरू में, मुझे यह बहुत मुश्किल लगा। मैं हर एक दिन रोया और घर का काम महसूस किया। यह एक अलग देश था, एक अलग संस्कृति। वास्तव में, सब कुछ इतना अलग था। मैं वापस आना चाहता था, लेकिन फुटबॉल ने मुझे वहीं बनाए रखा। धीरे-धीरे, मुझे सिस्टम की आदत हो गई और उसके बाद मैं बस गया और पीछे मुड़कर नहीं देखा। इन वर्षों के दौरान, क्या आपने कभी अपना भारतीय पासपोर्ट देने के बारे में सोचा? इशान ने कहा, कभी नहीं- और मुझे क्यों करना चाहिए? मैं दिल से एक

भारत की मुक्केबाज निखत जरीन का जलवा जारी

भारत की मुक्केबाज निखत जरीन का जलवा जारी



वर्ल्ड चैंपियन को हराकर तुर्की में चल रहे टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंची, गौरव सोलंकी भी जीते
इस्तांबुल ■ एजेसी
भारत की युवा महिला मुक्केबाज निखत जरीन इस्तांबुल में चल रहे वर्ल्ड चैंपियनशिप टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंच गईं हैं। 24 साल की निखत ने 51 किलोग्राम वेट

से कम वजन में डेब्यू कर लिया है। सेमीफाइनल में जरीन का सामना 2019 की वर्ल्ड चैंपियनशिप की सिल्वर मेडलिस्ट तुर्की की बुसेनाज चाकिरोग्लू से होगा। निखत जरीन भले ही हाल फिलहाल जोरदार फॉर्म में चल रही हैं, ओलिंपिक में महिलाओं की 51 किलोग्राम वेट कैटेगरी में 6 बार की वर्ल्ड चैंपियन और पूर्व ओलिंपिक ब्रॉन्ज मेडलिस्ट एमसी मेरीकॉम भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। मेरीकॉम ने ओलिंपिक क्वालिफायर के लिए हुए ट्रायल में निखत को 9-1 से हराया था। इसके बाद उन्होंने क्वालिफायर में अच्छे प्रदर्शन कर ओलिंपिक क्वालीफाई किया था। भारतीय मुक्केबाजी संघ का साफ नियम है कि जिस मुक्केबाज को कोटा मिलता है, उसे ही ओलिंपिक में भाग लेने का मौका मिलता है। टूर्नामेंट में हिस्सा ले रहे अन्य भारतीय मुक्केबाजों सांजिया लाटेरा (57 किग्रा), प्रवीण (60 किग्रा), ज्योति (69 किग्रा) और शिवा थापा (63 किग्रा) को क्वाटर फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। शिवा थापा को तुर्की के हकान डोगन ने कड़े मुकाबले में हराया।

सोलंकी भी 4-1 से जीते

निखत के अलावा 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स के गोल्ड मेडलिस्ट गौरव सोलंकी भी सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। सोलंकी ने 57 किलोग्राम वेट कैटेगरी में तुर्की के आयकोल मिजान को हराया। इस बाउट में सोलंकी ने टेक्नीकल थ्रेठता के आधार पर 4-1 से जीत हासिल की। निखत की तरह गौरव ने भी कम से कम ब्रॉन्ज मेडल पक्का कर लिया है। सेमीफाइनल में गौरव का सामना अर्जेंटीना के निको कुएलो से होगा।



अमेजन 'संभव अवॉर्ड्स' के दूसरे संस्करण का ऐलान

बैंगलूर ■ एजेसी
अमेजन इंडिया ने शुरुआत को 'अमेजन संभव अवॉर्ड्स' के दूसरे संस्करण का ऐलान किया है। इसके तहत उन सभी लोगों के जुनून का जश्न मनाया जाएगा जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और भारत के लघु व्यवसायों के विकास में अपना योगदान दिया है। इन पुरस्कारों के माध्यम से अमेजन का लक्ष्य उन व्यवसायों को पहचान करना है जिन्होंने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दिया है और साथ ही वे उन स्तंभों का भी हिस्सा हैं जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं जैसे एएसएमबी डिजिटलीकरण, स्टार्टअप को शुरूआत, नवाचार, कौशल और रोजगार सृजन और निर्यात इत्यादि। अमेजन इंडिया में एएसएमबी और सेलिंग पार्टनर एक्सपेरियंस के निदेशक प्रणव भसीन कहते हैं, नई चीजों की खोज और उपमशीलाता आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के प्रमुख घटक हैं। कुछ नया आजाजाने की क्षमता और उसके प्रति जुनून से ही पिछले साल लघु उद्योगों को टिके रहने में मदद मिली है। उन्होंने आगे कहा, भारत के लघु उद्योगों ने एक नए बचचामक का निर्माण किया, एक नया रास्ता दिखाया है, जो अनुकरणीय

वर्ग में अपने चुनौती पेश करेंगे। हर वर्ग के बिजनेसों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक दिया जाएगा। इस टूर्नामेंट में कैडेट विश्व चैंपियन कोमल, युथ ओलंपिअक की रजत पदक विजेता सिमरन दिल्ली तथा पूर्व कैडेट विश्व चैंपियनशिप की पदक विजेता सोनिका हुडा हरियाणा का प्रतिनिधित्व करेंगे।

लगातार पांच सत्रों की गिरावट के बाद आज शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ। आज दिन भर के उतार-चढ़ाव के बीच मार्केट दिन के उत्तरी स्तर पर बंद होने में कामयाब रहा। बीएसई के 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 641.72 अंक की बढ़त के साथ 49,858.24 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 186.15 अंकी मजबूती के साथ 14,744 के स्तर पर बंद हुआ है। वैश्विक स्तर पर नकारात्मक रुख के बावजूद सूचकांक में अच्छी हिस्सेदारी रखने वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचयूएल और आईसीआईसीआई बैंक में तेजी के साथ बाजार में मजबूती आयी। इस हफ्ते के अंतिम कारोबारी दिन को मिड और स्मालकैप शेयरों में भी बढ़त देखने को मिली और कारोबार के अंत में बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 1.35 फीसद और स्मालकैप इंडेक्स 0.41 फीसद की बढ़त लेकर बंद

पांच सत्रों की गिरावट के बाद चढ़ा बाजार

नई दिल्ली ■ एजेसी
लगातार पांच सत्रों की गिरावट के बाद आज शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ। आज दिन भर के उतार-चढ़ाव के बीच मार्केट दिन के उत्तरी स्तर पर बंद होने में कामयाब रहा। बीएसई के 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 641.72 अंक की बढ़त के साथ 49,858.24 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 186.15 अंकी मजबूती के साथ 14,744 के स्तर पर बंद हुआ है। वैश्विक स्तर पर नकारात्मक रुख के बावजूद सूचकांक में अच्छी हिस्सेदारी रखने वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचयूएल और आईसीआईसीआई बैंक में तेजी के साथ बाजार में मजबूती आयी। इस हफ्ते के अंतिम कारोबारी दिन को मिड और स्मालकैप शेयरों में भी बढ़त देखने को मिली और कारोबार के अंत में बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 1.35 फीसद और स्मालकैप इंडेक्स 0.41 फीसद की बढ़त लेकर बंद



शेयर बाजार सेंसेक्स 641 अंक उछल कर 49,858 पर बंद, निफ्टी में 186 अंकों की बढ़त
पांच सत्रों की गिरावट के बाद चढ़ा बाजार
एल एंड टी, टेक महिंद्रा, बजाज ऑटो और टाइटन प्रमुख हैं। रिलायंस सिक्वेरिटीज के रणनीति मामलों के प्रमुख विनोद मोदी ने कहा, "कमजोर वैश्विक रुख के बावजूद घरेलू शेयर बाजार में पांच दिनों की गिरावट के बाद जोरदार तेजी आयी।
दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली कंपनियों (एफएमसीजी), दवा, धातु, और रिलायंस इंडस्ट्रीज में अच्छी तेजी से मानक सूचकांक में मजबूती आयी। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के बढ़ते मामलों को लेकर चिंता के बावजूद बांड प्रतिफल में हल्की गिरावट से घरेलू शेयर बाजार को समर्थन मिला। एशिया के अन्य बाजारों में शंघाई, हांगकांग, सोव्यो और सोल में गिरावट रही। भारतीय समयानुसार दोपहर बाद खुले यूरोप के प्रमुख बाजारों में नुकसान का रुख रहा। इस बीच, वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.36 प्रतिशत की बढ़त के साथ 64.14 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया।

दोपहर बाद चढ़ा बाजार
सुबह सेंसेक्स दिन के न्यूनतम स्तर 48586 तक लुढ़क चुका था। उतार-चढ़ाव के बीच दोपहर बाद में तेजी दिखने लगी। सवा बाराह बजे सेंसेक्स 49041 के स्तर पर था। लौटती शुरू हुई तो एक समय सेंसेक्स 50003 के आज के उच्च स्तर पर पहुंच गया।

दोपहर बाद चढ़ा बाजार
सुबह सेंसेक्स दिन के न्यूनतम स्तर 48586 तक लुढ़क चुका था। उतार-चढ़ाव के बीच दोपहर बाद में तेजी दिखने लगी। सवा बाराह बजे सेंसेक्स 49041 के स्तर पर था। लौटती शुरू हुई तो एक समय सेंसेक्स 50003 के आज के उच्च स्तर पर पहुंच गया।

